Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 5

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 24

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

18 शव्वाल 1441 हिजरी कमरी 11 इहसान 1399 हिजरी इहसान 11 जून 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

नमाज़ में लज़्ज़त और आनन्द भी उबूदीयत और रबूबियत के एक सम्बन्ध से पैदा होता है।

जब तक अपने आपको तुच्छ या तुच्छ समान क़रार दे कर जो रबूबियत का ज़ाती तक़ाज़ा है न डाल दे।

इस का फ़ैज़ान और छाया इस पर नहीं पड़ती

और अगर ऐसा हो तो फिर उच्च स्तर दर्जा का आनन्द प्राप्त होती है। जिस से बढ़कर कोई आनन्द नहीं है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

नमाज़ के अरकान की वास्तविकता

नमाज़ के अरकान वास्तव में रुहानी उठने बैठने के दो हिस्से हैं। इन्सान को ख़ुदा तआला के समक्ष खड़ा होना पड़ता है और क़ियाम भी शिष्टाचार सेवा करने वालों में से है। रुकू जो दूसरा हिस्सा है बतलाता है कि मानो तैयारी है कि वह आज्ञापालन के लिए में किस क़दर गर्दन झुकाता है और सिज्दा सम्पूर्ण शिष्टाचार और सम्पूर्ण विनय और विनम्रता को जो इबादत का लक्ष्य है ज़ाहिर करता है। यह शिष्टाचार और तरीके हैं जो ख़ुदा तआला ने बतौर याददाश्त के निर्धारित कर दिए हैं और जिस्म को भीतरी तरीक़ा से हिस्सा देने के लिए उनको निर्धारित किया है। इस के अतिरिक्त भीतरी तरीक़ा के करने की लिए एक ज़ाहरी तरीक़ा भी रख दिया है। अब अगर ज़ाहिरी तरीक़ा में(जो अंदरूनी और बातिनी तरीक़ा का एक प्रतिबिम्ब है) सिर्फ नक़्क़ाल की तरह नक़लें उतारी जाएं और उसे एक गहरा बोझ समझ कर उतार फैंकने की कोशिश की जाए। तो तुम ही बतलाओ। इस में क्या लज़्ज़त और आनन्द आ सकता है? और जब तक लज़्ज़त और आनन्द न आए उस की हक़ीक़त कैसे प्रमाणित होगी और यह उस समय होगा जब कि रूह भी साक्षात विनय और विनम्रता हो कर अल्लाह तआला के समक्ष गिरे और जो ज़बान बोलती है रूह भी बोले। इस वक़्त एक आनन्द और नूर और सन्तोष प्राप्त हो जाता है। मैं इस को और खोल कर लिखना चाहता हूँ कि इन्सान जितने स्तर तय करके इन्सान होता है। अर्थात कहाँ नुतफ़ा। बल्कि इस से भी पहले नुतफ़ा के अंग अर्थात विभिन्न किस्म की ख़ुराक और उन की साख़त और बनावट। फिर नुतफ़ा के बाद विभिन्न स्तर के बाद बच्चा फिर जवान , बूढ़ा। अत: इन समस्त अवस्थायों में जो इस पर विभिन्न समयों में गुज़रे हैं। अल्लाह तआला की रबूबियत का स्वीकार करने वाला हो और वह नक़्शा प्रत्येक क्षण उस के ज़हन में खिंचा रहे। तो भी वह इस योग्य हो सकता है कि रबूबियत के समक्ष अपनी उबूदीयत को डाल दे। अत: लक्ष्य यह है कि नमाज़ में लज़्ज़त और आनन्द भी उबूदीयत और रबूबियत के एक सम्बन्ध से पैदा होता है। जब तक अपने आपको तुच्छ या तुच्छ समान क़रार दे कर जो रबूबियत का ज़ाती तक़ाज़ा है न डाल दे। इस का फ़ैज़ान और छाया इस पर नहीं पड़ती और अगर ऐसा हो तो फिर उच्च स्तर दर्जा का आनन्द प्राप्त होती है। जिस से बढ़कर कोई आनन्द नहीं है।

सच्ची नमाज़

इस स्थान पर इन्सान की रूह जब साक्षात नीस्ती हो जाती है तो वह ख़ुदा की तरफ़ एक चश्मा की तरह बहती है और अल्लाह के अतिरिक्त से उसे सम्पूर्ण रूप से दूरी हो जाती है। उस वक़्त ख़ुदा तआला की मुहब्बत उस पर गिरती है। इस जुड़ाव के वक़्त इन दो जोशों से जो ऊपर की तरफ़ से रबूबियत का जोश और नीचे की तरफ़ से उबूदीयत का जोश होता है, एक विशेष अवस्था पैदा होती है, इस का नाम सलात है। अत: यही वह सलात है जो बुराइयों को भस्म कर जाती है और अपनी जगह एक नूर और चमक छोड़ देती है। जो सालिक को रास्ता के ख़तरों और मुश्किलों के समय एक रोशन चिराग़ का काम देती है और हर किस्म की रुकावट और ठोकर के पत्थरों और रास्ता के कांटों से जो उस की राह में होती हैं, आगाह करके बचाती है और यही वह हालत है जब कहा اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ(अल-अनकबूत:46) का इतलाक़ इस पर होता है। क्योंकि उस के हाथ में नहीं। नहीं उस के दिल के चिराग़ रखने के स्थान पर एक रोशन चिराग़ रखा हुआ होता है और यह स्तर सम्पूर्ण विनय, सम्पूर्ण विनम्रता और आजज़ी और पूरी इताअत से प्राप्त होता है। फिर गुनाह का विचार उसे कैसे आ सकता है और इन्कार इस में पैदा ही नहीं हो सकता। अश्लीलता की तरफ़ उस की नज़र उठ ही नहीं सकती। अत: उसे ऐसी लज़्ज़त , ऐसा आनन्द प्राप्त होता है मैं नहीं समझ सकता कि उसे किस प्रकार वर्णन करूँ।

अल्लाह के अतिरिक्त की तरफ़ रुजू

फिर यह बात याद रखने के योग्य है कि यह नमाज़ जो अपने वास्तिवक अर्थो में नमाज़ है, दुआ से प्राप्त होती है। अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य से सवाल करना मोमिनाना ग़ैरत के स्पष्ट रूप से विरोधी है क्योंकि यह स्तर दुआ का अल्लाह ही के लिए है। जब तक इन्सान पूरे तौर पर भयभीत हो कर अल्लाह तआला ही से सवाल न करे और इसी से न मांगे। सच समझो कि हक़ीक़ी तौर पर वह सच्चा मुसलमान और सच्चा मोमिन कहलाने का अधिकारी नहीं। इस्लाम की वास्तिवकता ही यह है कि इस की समस्त ताक़तें अंदरूनी हूँ या बैरूनी, सबकी सब अल्लाह तआला ही के आस्ताना पर गिरी हुई हों। जिस तरह पर एक बड़ा इंजन बहुत से पुर्ज़ों को चलाता है। अत: इसी तरीका से जब तक इन्सान अपने हर काम और हर हरकत तथा ठहराव को इसी इंजन की बड़ी ताकत के अधीन न कर ले वे क्योंकर अल्लाह तआला की उलूहियत का मानने वाला हो सकता है और अपने आपको اِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ (अल-अनाम:80) कहते वक़्त वास्तव में हनीफ़ कह सकता है? जैसे मुंह से कहता है वैसे ही उधर की तरफ़ मुतवज्जा हो तो नि:सन्देह वह मुस्लिम है। वह मोमिन और हनीफ़ है लेकिन जो आदमी अल्लाह तआला के अतिरिक्त अल्लाह से सवाल करता है और इधर भी झुकता है वह याद रखे कि बड़ा ही बदक़िस्मत और महरूम है कि इस पर वह वक़्त आ जाने वाला है कि वह ज़बानी और नुमाइशी तौर पर अल्लाह तआला की तरफ़ न झुक सके।

नमाज़ छोड़ने की आदत और सुस्ती का एक कारण यह भी है क्योंकि जब इन्सान

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (भाग-7)

हॉलैंड से फ्रांस के लिए रवानगी,फ्रांस में आना ,मस्जिद बैयतुल अता का उद्घाटन,फ़ैमिली मुलाक़ातें जलसा सालाना फ्रांस का आयोजन,हुज़ूर अनवर के साथ औरतों का इजलास और सनदों का तक़सीम करना

फ्रांस के शहर Trie-Chateau मैं जमाअत फ्रांस के नए सैंटर "बैयतुल अता " का उद्घाटन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने इस स्थान का नाम रखते हुए अमीर साहिब फ्रांस को फ़रमाया था कि

"जब अल्लाह तआला ने अता की है तो फिर "बैयतुल अता" नाम रख लें।

हॉलैंड के एक क्षेत्रीय टीवी Omroep Flevoland" मैं अहमदिया मस्जिद अलमेरे (हॉलैंड) के उद्घाटन के बारे में प्रसारण

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

1 अक्तूबर 2019 ई(दिनांक मंगलवार)

मेहमानों के विचार

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के इस ख़िताब ने इस आयोजन में शामिल होने वाले मेहमानों पर गहरा प्रभाव छोड़ा। कुछ मेहमानों ने अपनी विचार और भावनाओं का इज़हार किया।

अलमेरे Almere) चर्च के चेयरमैन हाईवोतेज़ल साहिब ने अपनी भावनाओं का इज़हार करते हुए कहा: आपकी जमाअत का पैग़ाम अमन का पैग़ाम है। आपके ख़लीफ़ा ने अमन और धार्मिक आज़ादी पर बहुत ही उत्तम तक़रीर की है। अलमेरे में पहले कैथोलिकस और परोटीसटनटस मिलकर अमन के साथ रहते थे और अब उम्मीद है कि अहमदी भी हमारे साथ मिलकर अमन के साथ रहेंगे।

एक लोकल डच मेहमान यूना से साहिब ने वर्णन किया: मुझे कुछ समय पहले उद्घाटन का दावतनामा मिला था। आपकी जमाअत की यह बहुत अच्छी बात है कि आप दूसरों के साथ बातचीत करने को तैय्यार हैं। आपके ख़लीफ़ा का पैग़ाम बहुत स्पष्ट था और मैं इंशा अल्लाह फिर इस मस्जिद में आऊँगा।

एक अरब मेहमान अल-वलीद साहिब ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा: आपके प्रोग्राम में आकर बहुत अच्छा लगा। मैं कुछ समय से आप की जमाअत का परिचय प्राप्त कर रहा हूँ। दुनिया को आपकी जमाअत के अमन के पैग़ाम की ज़रूरत है और आपके ख़लीफ़ा का ख़िताब मुझे बहुत पसंद आया कि यह मस्जिद अमन की भूमिका अदा करेगी।

एक डच औरत हीनी साहिबा ने कहा "ख़लीफ़ा का पैग़ाम अमन का पैग़ाम है। मैं अलमेरे में रहती हूँ। मुझे बहुत अच्छा लगा कि आपने हमें अपनी मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर बुलाया है। आपकी जमाअत बहुत मेहमान नवाज़ है। आपके ख़लीफ़ा का अमन का पैग़ाम हमारी ईसाई शिक्षाओं से काफ़ी मिलता है और मैं उम्मीद करती हूँ कि आपकी जमाअत हमारे साथ मिलकर इस क्षेत्र में अमन को स्थापित रखेगी।

चेयरपर्सन मंदवीवनीदव (NGO) याट्रेशाहाफ़े मान साहिबा कहती हैं। मैं दी हेग से आई हूँ और मुझे आपके प्रोग्राम की आर्गेनाईज़ेशन बहुत उत्तम लगी। मैं आपके ख़लीफ़ा से पहले मिल चुकी हूँ। और मैं समझती हूँ कि आपके ख़लीफ़ा और आपकी जमाअत हमारे साथ मिलकर आजकल के समाज की कई समस्याएं हल कर रहे हैं।

एक अरब मेहमान ज़करिया अल-अज़हर साहिब ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा: आज का प्रोग्राम बहुत अच्छा था। आपके ख़लीफ़ा की तक़रीर बहुत उत्तम थी और अगर हम अमन चाहते हैं तो हमें उनकी तक़रीर पर ज़रूर अनुकरण करना चाहिए। और एक अरब होने के नाते में यह भी कहना चाहता हूँ कि आपके प्रोग्राम के शुरू में तिलावत क़ुरआन करीम की गई थी जो मुझे देखकर बहुत अच्छा लगा।

एक लोकल मेहमान देने के साहिबा ने वर्णन किया: आपका प्रोग्राम बहुत उत्तम तरीक़ा से आर्गेनाईज़ किया गया है। आपके ख़लीफ़ा को देखकर बहुत अच्छा लगा। ख़लीफ़ा की तक़रीर बहुत अच्छी थी। आपके प्रोग्राम की यह बात भी अच्छी है कि आपने औरतों के लिए भी अच्छा प्रबन्ध किया हुआ है। मैं चाहती हूँ कि मैं भविष्य में फिर कभी इस मस्जिद में आऊँ और आपकी जमाअत की औरतों से मिलूं।

एक लोकल मेहमान फेलिप (Filip) साहिब ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा मुझे आपकी मस्जिद देखने का बहुत शौक़ था। इसलिए मैं आज यहां आया हूँ। इस के साथ साथ मैं ने आप के ख़लीफ़ा को भी देख लिया है तो आज का दिन मेरे लिए बहुत स्पेशल है। आपके ख़लीफ़ा की तक़रीर का मुझ पर बहुत अच्छा प्रभाव हुआ है।

एक लोकल मेहमान अदवन साहिब ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा: यह पहला अवसर है कि मैं मुसलमानों के इस किस्म के प्रोग्राम में आ रहा हूँ। आने से पहले मेरे पड़ोसी ने कहा था बच कर रहना। मुसलमानों का कुछ पता नहीं कब क्या कर दें। लेकिन मुझे यहां आकर बहुत अच्छा लगा। आपकी जमाअत के लोगों ने हमारा शुरू से लेकर आख़िर तक विचार रखा और आपकी मेहमान-नवाज़ी यादगार रहेगी। आपके ख़लीफ़ा के ख़िताब से हमें मालूम हो गया है कि आप अमन प्रिय हैं और अलमेरे शहर के माहौल को ख़राब नहीं करेंगे।

एक लोकल औरत मेहमान इवलिन साहिबा ने वर्णन किया:आपके ख़लीफ़ा की तक़रीर आजकल के हालात में बहुत ज़रूरी है। अफ़सोस की बात है कि दुनिया को इस्लाम की यह तस्वीर नहीं दिखाई जाती। आपकी जमाअत के लोग बहुत मेहनती हैं और मेहमान नवाज़ हैं। मैंने आज इस मस्जिद को पहली बार देखा है। मगर मैं आइन्दा भी यहां आना चाहती हूँ क्योंकि आपकी मस्जिद में मुझे सुकून मिलता है।

एक सिख औरत गुरप्रीत कौर साहिबा ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा: हम आपकी जमाअत को काफ़ी समय से जानते हैं। हम कादियान भी जा चुके हैं और इंडिया में हमारा घर अमृतसर में है। आपके आज के इस प्रोग्राम में आकर बहुत अच्छा लगा। आप सब आपस में एक फ़ैमिली की तरह रहते हैं जो कि आज के दौर में निहायत ज़रूरी है।

2 अक्तूबर 2019 ई(दिनांक बुधवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े छ: बजे मस्जिद बैयतुन्नूर तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायशगाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक, पत्र और रिपोर्टें देखीं और हिदायतों से नवाज़ा।

11 बजकर 20 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने आदरणीय अमीर साहिब हॉलैंड हिबतुन्नूर फरहाख़न साहिब और आदरणीय

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

हे लोगो अल्लाह का तक़्वा धारण करो और सब्र करो। ...अल्लाह का तक़्वा इख़तियार करो ।अल्लाह तुम्हारी राहें खोलने वाला और तुम्हारे काम बनाने वाला है

"तुम से पहले जो लोग गुज़रे हैं उनमें से एक शख़्स के लिए ज़मीन में गढ़ा खोदा जाता फिर उसे इस में गाड़ दिया जाता। फिर आरा लाया जाता और वह उस के सिर पर रखा जाता और इस शख़्स के दो टुकड़े कर दिए जाते और यह बात उस को इस के धर्म से न रोक सकती।"

"अल्लाह ख़ब्बाब पर रहम करे वह अपनी ख़ुशी से इस्लाम लाए, उन्होंने इताअत करते हुए हिजरत की। एक मुजाहिद के तौर पर ज़िन्दगी गुज़ारी। जिस्मानी तौर पर वह आज़माऐ गए और जो शख़्स नेक काम करे अल्लाह उस का अज्र नष्ट नहीं करता।"

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान बदरी सहाबी हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत रज़ी अल्लाह अन्हो के प्रशंसनीय गुणों का वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 24 मई 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू. के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज में एक बदरी सहाबी हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत रज़ी अल्लाह तआला अन्हो का ज़िक्र करूँगा। हज़रत ख़ब्बाब रज़ि का सम्बन्ध क़बीला बनू सअद बिन ज़ैद से था। उनके पिता का नाम अरत बिन जन था। उनकी कुनिय्यत अबू अब्दुल्लाह और कई के नज़दीक अबू मुहम्मद और अबू यहाया भी थी। जाहिलीयत के ज़माना में ग़ुलाम बना कर मक्का में यह बेच दिए गए। यह उत्बा बिन ग़ज़वान के ग़ुलाम थे। कई के निकट उम्मे अन्मार ख़ुज़ाईया के ग़ुलाम थे। बनू ज़ुहरा के हलीफ़ हुए। अव्वल इस्लाम लाने वाले सहाबा में में यह छटे नम्बर पर थे और उन अव्वलीन में से हैं जिन्होंने अपना इस्लाम ज़ाहिर कर के इस की सज़ा में सख़्त मुसीबतें बर्दाश्त किए। हज़रत ख़ब्बाब रज़ि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दारे अर्क़म में तशरीफ़ लाने और इस में दावत देने से पहले इस्लाम लाए थे।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 121-122 ख़ब्बाब बिन अल्अरत दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

(अलासाब फ़ी तमीज़िस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 221 ख़ब्बाब बिन अल्अरत दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1995 ई)

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 147 ख़ब्बाब बिन अल्अरत दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

मुजाहिद कहते हैं कि सबसे पहले जिन लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दावत पर लब्बैक कहते हुए इस्लाम ज़ाहिर क्या वे ये हैं: हज़रत अबू बकर रज़ि, हज़रत ख़ब्बाब रज़ि, हज़रत सुहैब रज़ि, हज़रत बिलाल रज़ि, हज़रत अम्मार रज़ि और हज़रत सुमय्या माता हज़रत अम्मार रज़ि। अत: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तो अल्लाह तआला ने उनके चाचा अबूतालिब के माध्यम से महफ़ूज़ रखा और हज़रत अबूबकर रज़ि को ख़ुद उनकी क़ौम ने महफ़ूज़ रखा। बहरहाल ये जो लिखने वाला हैं यह एक ख़ास परिप्रेक्ष्य में यह लिख रहा है लेकिन यह बात बहरहाल लाज़िमी है और इस लिखने वाले के ज़हन में भी शायद यह नहीं रहा कि बावजूद उस के जो उसने लिखा है कि उनके चाचा अबूतालिब ने उनको महफ़ूज़ रखा या उनकी वजह से हिफ़ाज़त की। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुद भी मुशरिकीन मक्का के हाथों मज़ालिम से महफ़ूज़ न रहे और न ही हज़रत अबूबकर रज़ि महफ़ूज़ रहे। तारीख़ इस पर गवाह है। उन्हें भी तरह तरह के ज़ुलम तथा अत्याचार का निशाना बनाया गया बल्कि हज़रत अबू तालिब सहित ज़ुल्मों का निशाना बनाया गया। लिखने वाला तो यह कहता है कि फिर ये लोग तो महफ़ूज़ रहे लेकिन जैसा कि मैंने कहा यह भी इस की एक सोच है क्योंकि तारीख़ तो यह कहती है कि न आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम महफ़ूज़ रहे, न हज़रत अबू बकर रज़ि महफ़ूज़ रहे लेकिन बहरहाल वह फिर अपने इस ख़्याल का इज़हार करते हुए आगे लिखता है कि ये तो दोनों महफ़ूज़ हुए लेकिन बाक़ी सब लोगों को लोहे की ज़िरहें पहनाई गईं और उन्हें सूरज की तेज़ धूप में झुलसाया गया और जितना अल्लाह ने चाहा उन्होंने लोहे और सूरज की गर्मी को बर्दाश्त किया। शअबी कहते हैं कि हज़रत ख़ब्बाब रज़ि ने बहुत सब्र किया और कुफ़्फ़ार की मांग अर्थात इस्लाम से इन्कार को स्वीकार नहीं किया तो उन लोगों ने उनकी पीठ पर गर्मगर्म पत्थर रखे यहां तक कि उनकी पीठ से गोश्त जाता रहा। उसदुल ग़ाबह की यह सारी रिवायत है।

(उसदुल ग़ाब फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 147 ख़ब्बाब बिन अल्अरत दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

हज़रत ख़ब्बाब रज़ि की एक घटना जो हज़रत उमर रज़ि के इस्लाम क़बूल करने के वक़्त पेश आया उस का तफ़सीली वर्णन करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में यूं बयान फ़रमाई है कि अभी हज़रत हमज़ा रज़ि को इस्लाम लाए सिर्फ़ कुछ दिन ही गुज़रे थे कि अल्लाह तआला ने मुस्लमानों को एक और ख़ुशी का अवसर दिखाया अर्थात हज़रत उमर रज़ि जो अभी तक कठोर मुख़ालिफ़ीन में से थे मुस्लमान हो गए। उनके इस्लाम लाने का क़िस्सा भी निहायत दिलचस्प है। बहुत सारे लोगों ने सुना भी हुआ है, पढ़ा भी हो है लेकिन यह विस्तार जो आप ने बयान की है यह भी मैं वर्णन कर देता हूँ और यह बयान करना उनकी तारीख़ के लिए ज़रूरी है। हज़रत उमर रज़ि की तबीयत में सख़्ती का माद्दा तो ज़्यादा था ही मगर इस्लाम की शत्रुता ने उसे और भी ज़्यादा कर दिया था। अत: इस्लाम से पहले उमर ग़रीब और कमज़ोर मुस्लमानों को उनके इस्लाम की वजह से बहुत सख़्त तकलीफ़ दिया करते थे लेकिन जब वह उन्हें तकलीफ़ देते-देते थक गए और उनके वापस आने की कोई सूरत ना देखी तो ख़्याल आया क्यों ना उस फ़ित्ने के मूल का अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ही ख़ातमा कर दिया जाए। यह ख़्याल आना था कि तलवार लेकर घर से निकले और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तलाश शुरू की। रास्ते में एक शख़्स ने उन्हें नंगी तलवार हाथ में लिए जाते देखा तो कहा उमर !कहाँ जाते हो? उमर ने जवाब दिया मुहम्मद(सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) का काम तमाम करने जाता हूँ। उसने कहा क्या तुम मुहम्मद को क़त्ल करके बनू अबद मनाफ़ से महफ़ूज़ रह सकोगे? ज़रा पहले अपने घर की तो ख़बर लो। तुम्हारी बहन और बहनोई मुस्लमान हो चुके हैं। हज़रत उमर रज़ि झट पलटे, वापस हुए और अपनी बहन फ़ातिमा के घर का रास्ता लिया। जब घर के क़रीब पहुंचे तो अंदर से क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत की आवाज़ आई। जो ख़ब्बाब बिन अल- अर्त अच्छी आवाज़ के साथ पढ़ कर सुना रहे थे। उमर रज़ि ने यह आवाज़ सुनी तो ग़ुस्सा और भी बढ़ गया। शीघ्र से घर में दाख़िल हुए लेकिन उनकी आहट सुनते ही ख़ब्बाब तो फ़ौरन कहीं छिप गए

और फ़ातिमा ने क़ुरआन शरीफ़ के पृष्ठों को भी इधर उधर छुपा दिए। हज़रत उमर रज़ि की बहन का नाम फ़ातिमा था। हज़रत उमर रज़ि अंदर आए तो ललकार कर कहा मैं ने सुना है तुम अपने धर्म से फिर गए हो। यह कह कर अपने बहनोई सईद बिन ज़ैद से लिपट गए। फ़ातिमा अपने पति को बचाने के लिए आगे बढ़ीं तो वह भी ज़ख़्मी हुईं मगर फ़ातिमा ने दिलेरी के साथ कहा। हाँ उमर! हम मुस्लमान हो चुके हैं और तुम से जो हो सकता है कर लो। अब हम इस्लाम को नहीं छोड़ सकते। हज़रत उमर रज़ि निहायत सख़्त आदमी थे लेकिन इस सख़्ती के पर्दा के नीचे मुहब्बत और नर्मी की भी एक झलक थी जो कई बार अपना रंग दिखाती थी। बहन का यह दलेरी भरा कलाम सुना, यह बात सुनी तो आँख ऊपर उठा कर उस की तरफ़ देखा तो वह ख़ून में नहाई हुई थी। इस नज़ारा का उमर के दिल पर एक ख़ास असर हुआ। कुछ देर ख़ामोश रह कर बहन से कहने लगे कि मुझे वह कलाम तो दिखाओ जो तुम पढ़ रहे थे? फ़ातिमा ने कहा कि मैं नहीं दिखाऊँगी क्योंकि तुम इन पृष्ठों को नष्ट कर दोगे, इन सफ़्हों को नष्ट कर दोगे। उमर ने जवाब दिया। नहीं नहीं तुम मुझे दिखाओ। मैं ज़रूर वापस कर दूँगा। फ़ातिमा ने कहा मगर तुम अपवित्र हो, नापाक हो और क़ुरआन को पाकीज़गी की हालत में हाथ लगाना चाहिए। अत: तुम पहले नहा लो तो फिर दिखा दूँगी और फिर देख लेना। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि लिखते हैं कि शायद उनकी इच्छा यह भी होगा कि ग़ुसल करने से उमर का ग़ुस्सा बिलकुल दूर हो जाएगा और वह ठंडे दिल से ग़ौर करने के काबिल हो सकेंगे। जब उमर ग़ुसल से फ़ारिग़ हुए तो फ़ातिमा ने क़ुरआन के पृष्ठ निकाल कर उनके सामने रख दिए। उन्होंने उठा कर देखा तो सूर: ताहा की आरम्भिक आयतें थीं। हज़रत उमर रज़ि ने एक मरऊब दिल के साथ उन्हें पढ़ना शुरू किया और एक एक शब्द उस सईद फ़ितरत के अंदर घर किए जाता था अपना असर दिखा रहा था। पढ़ते पढ़ते जब हज़रत उमर रज़ि इस आयत पर पहुंचे कि

اِنَّنِیۡ اَنَا اللّٰہُ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعۡبُدۡنِیۡ وَ اَقِمِ الصَّلٰوۃَ لِذِکۡرِیۡ ۔ اِنَّ السَّاعَۃَ اٰتِیَۃٌ اَکَادُ اُخۡفِیۡہَا لِتُجۡزٰی کُلُّ نَفۡسٍۭ بِمَا تَسۡعٰی

(सूर:ताहा 15-16)

अर्थात मैं ही इस दुनिया का वाहिद ख़ालिक़ व मालिक हूँ मेरे सिवा और कोई उपासना के योग्य नहीं। अत: तुम्हें चाहिए कि सिर्फ मेरी ही इबादत करो और मेरी ही याद के लिए अपनी दुआओं को वक़्फ़ कर दो। देखो मौऊद घड़ी शीघ्र आने वाली है मगर हम उस के वक़्त को छुपाए हुए हैं ताकि हर शख़्स अपने किए का सच्चा बदला पा सके।

जब हज़रत उमर रज़ि ने यह आयत पढ़ी तो गोया उनकी आँख खुल गई और सोई हुई फ़ितरत चौंक कर जाग गई। बे-इख़्तियार हो कर बोले। यह कैसा अजीब और पवित्र कलाम है। ख़ब्बाब रज़ि ने ये शब्द सुने तो फ़ौरन बाहर निकल आए और ख़ुदा का शुक्र अदा किया और कहा। यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआ का नतीजा है क्योंकि ख़ुदा की क़सम! अभी कल ही मैंने आप को यह दुआ करते सुना था कि हे अल्लाह !तो उमर इब्न अल-ख़त्ताब या अमरो बिन हिश्शाम अर्थात अबु-जहल में से किसी एक को ज़रूर इस्लाम प्रदान कर दे। हज़रत उमर रज़ि को अब एक-एक पल बोझ था। इस कलाम को पढ़ने के बाद और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की गरिमा को पहचानने के बाद उनके लिए अब यहां टिक रहना बड़ा मुश्किल हो रहा था। उन्होंने ख़ब्बाब रज़ि से कहा कि मुझे अभी मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का रास्ता बताओ वह कहाँ है। मगर कुछ ऐसे आपे से बाहर हो रहे थे कि तलवार इसी तरह नंगी खींच रखी थी। यह ख़्याल नहीं आया कि तलवार भी मियान में डाल लें। नंगी तलवार को इसी तरह हाथ में पकड़ा हुआ था। बहरहाल उस ज़माने में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दारे अर्क़म में मुक़ीम थे। अत: ख़ब्बाब रज़ि ने उन्हें वहां का पता बता दिया। उमर रज़ि वहां गए और दरवाज़े पर पहुंच कर ज़ोर से दस्तक दी। सहाबा रज़ि ने दरवाज़ा की दराड़ में से उमर को नंगी तलवार थामे हुए देखकर दरवाज़ा खोलने में झिझक हुई, हिचकिचाहट की मगर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। दरवाज़ा खोल दो और हज़रत हमज़ा रज़ि ने भी कहा, हज़रत हमज़ा रज़ि भी वहां थे कि दरवाज़ा खोल दो। अगर नेक इरादे से आया है तो बेहतर वर्ना अगर नीयत बुरी है तो अल्लाह की कसम उसी की तलवार से इस का सिर उड़ा दूंगा। दरवाज़ा खोला गया। उमर नंगी तलवार हाथ में लिए अंदर दाख़िल हुए। उनको देखकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आगे बढ़े और उमर का दामन पकड़ कर ज़ोर से झटका दिया और कहा उमर किस इरादे से आए हो? अल्लाह की कसम मैं देखता हूँ कि तुम ख़ुदा के अज़ाब के लिए नहीं बनाए गए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं देखता हूँ कि तुम ख़ुदा के अज़ाब के लिए नहीं बनाए गए। उमर रज़ि ने अर्ज़ किया। हे अल्लाह के रसूल!मैं मुस्लमान होने आया हूँ। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ये शब्द सुने तो ख़ुशी से जोश में अल्लाहो अकबर कहा और साथ ही सहाबा रज़ि ने इस ज़ोर से अल्लाहो अकबर का नारा मारा कि मक्का की पहाड़ियां गूंज उठीं।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 157 से 159)

हज़रत ख़ब्बाब रज़ि बयान करते हैं कि एक बार हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अपनी तकलीफ़ का इज़हार किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस वक़्त काबा के साया में अपनी चादर पर टेक दिए बैठे थे। हमने आप की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि आप हमारे लिए सहायता नहीं मांगेगें। क्या आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन तंगी के हालात में हमारे लिए अल्लाह से दुआ नहीं करेंगे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुमसे पहले जो लोग गुज़रे हैं उनमें से एक शख़्स के लिए ज़मीन में गढ़ा खोदा जाता फिर उसे इस में गाड़ दिया जाता। फिर आरा लाया जाता और वह उस के सिर पर रखा जाता और इस शख़्स के दो टुकड़े कर दिए जाते और यह बात उस को इस के धर्म से न रोक सकती और लोहे की कंघियों से इस का गोश्त हड्डीयों या पट्ठों से नोच कर अलग कर दिया जाता और यह बात उस को इस के धर्म से न रोक सकती। फिर आप ने फ़रमाया अल्लाह की क़सम ! अल्लाह इस काम को अर्थात जो मेरा मिशन है इस को ज़रूर पूरा करेगा। जिस मक़सद के लिए मैं आया हूँ वह ज़रूर पूरा होगा, आसानियां भी आयेंगी ।फिर आगे आप ने फ़रमाया यहां तक कि एक ऊंठ सनआ से हज़रमूत तक सफ़र करेगा। सनआ और हज़रमूत यमन के दो शहर हैं और कहते हैं इन दोनों के मध्य 216 मील की दूरी है। बहरहाल आप ने फ़रमाया कि यह सफ़र करेगा और इस को सिवाए ख़ुदा के किसी का डर नहीं होगा। या यह भी फ़रमाया कि न अपनी बकरियों पर भेड़िए के हमला-आवर होने का डर होगा। आप ने फ़रमाया मगर तुम लोग जल्दी करते हो। सब्र से यह सारा काम होगा। बुख़ारी की रिवायत य है।

(सही अलबख़ारी किताबुल मनाक़िब हदीस नम्बर 3612)

(मोअजमुल बुलदान भाग 2 पृष्ठ 311 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

दूसरी जगह यह रिवायत इस तरह वर्णन हुई है। हज़रत ख़ब्बाब रज़ि बयान करते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुआ। आप एक दरख़्त के नीचे लेटे हुए थे और आप ने अपना हाथ अपने सिर के नीचे रखा हुआ था। मैंने निवेदन किया हे अल्लाह के रसूल! क्या आप हमारे लिए दुआ नहीं करेंगे उस क़ौम के ख़िलाफ़ जिनकी निसबत हमें डर है कि वह हमें हमारे धर्म से न फेर दें ? तो आप ने मुझसे अपना चेहरा तीन मर्तबा फेरा। चेहरा परे कर लिया और जब भी मैं आप से ये अर्ज़ करता तो आप अपना मुँह मोड़ लेते। तीसरी बार आप उठकर बैठ गए और फ़रमाया लोगो! अल्लाह का तक़्वा धारण करो और सब्र करो। ख़ुदा की क़सम तुमसे पहले ख़ुदा के ऐसे मोमिन बंदे गुज़रे हैं जिनके सिर पर आरा रख दिया जाता और उन्हें दो टुकड़े कर दिया जाता मगर वे अपने धर्म से पीछे न हटे। अल्लाह का तक़्वा धारण करो। अल्लाह तुम्हारी राहें खोलने वाला और तुम्हारे काम बनाने वाला है।

(अलमुस्तदरक अला सहीहीन लिल्हाकिम भाग 3 पृष्ठ 431-432 किताब मअरफतिस्सहाबा बाब ज़िक्र मनाक़िब ख़ब्बाब बिन अल्अरत हदीस 5643)

हज़रत ख़ब्बाब रज़ि से रिवायत है वह कहते हैं कि मैं लोहार था और आस बिन वायल के ज़िम्मा मेरा क़र्ज़ था। मैं इस के पास तक़ाज़ा करने आया तो उसने मुझसे कहा कि मैं हरगिज़ तुम्हारा क़र्ज़ अदा नहीं करूँगा जब तक तुम मुहम्मद का इन्कार ना करो। इस बात का ऐलान न करो कि मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बैअत से बाहर आता हूँ। जब तक तुम मुहम्मद का इन्कार न करोगे मैं अदा नहीं करूँगा तो हज़रत ख़ब्बाब रज़ि कहते हैं कि मैंने इस से कहा कि मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हरगिज़ इनकार नहीं करूँगा यहां तक कि तू मरे और फिर ज़िन्दा किया जाए अर्थात नामुमकिन है कि मैं इनकार करूँ। आगे से उसने भी इस तरह का जवाब दिया कि जब मैं मरने के बाद ज़िन्दा किया जाऊँगा और अपने माल और औलाद के पास आऊँगा तो उस वक़्त तेरा क़र्ज़ अदा कर दूँगा। उसने भी कह दिया मैंने तो नहीं देना। हज़रत ख़ब्बाब रज़ि कहते हैं कि इसी के बारे में यह आयात नाज़िल हुईं कि

اَفَرَءَیۡتَ الَّذِیۡ کَفَرَ بِاٰیٰتِنَا وَ قَالَ لَاُوۡتَیَنَّ مَالًا وَّ وَلَدًا ۔ اَطَّلَعَ الۡغَیۡبَ اَمِ

اتَّخَذَ عِنۡدَ الرَّحۡمٰنِ عَهۡدًا ۔ کَلَّا ؕ سَنَكۡتُبُ مَا يَقُوۡلُ وَنَمُدُّ لَهٗ مِنَ الۡعَذَابِ مَدًّا ۔ وَّنَرِثُهٗ مَا يَقُوۡلُ وَيَاۡتِيۡنَا فَرۡدًا ۔

(मर्यम 78 से 81)

क्या तूने इस शख़्स की हालत पर ग़ौर नहीं किया जिसने हमारे निशानों का इनकार किया और कहा कि मुझे यक़ीनन बहुत सा माल और बहुत से बेटे दिए जाऐंगे। क्या उसने ग़ैब का हाल मालूम कर लिया है या ख़ुदाए रहमान से कोई वादा ले लिया है। ऐसा हरगिज़ नहीं होगा हम उस के इस क़ौल को महफ़ूज़ रखेंगे और इस के अज़ाब को लंबा कर देंगे और जिस चीज़ पर वह फ़ख़र कर रहा है इस के हम वारिस हो जाऐंगे और वह हमारे पास अकेला ही आएगा

(अत्तबक़ातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 122 ख़ब्बाब बिन अल्अरत दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत ख़ब्बाब रज़ि लोहार थे और तलवारें बनाया करते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनसे बहुत उलफ़त रखते थे और उनके पास तशरीफ़ ले जाया करते थे। उनकी मालिका को इस की ख़बर मिली कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत ख़ब्बाब रज़ि के पास आते हैं तो वह गर्मगर्म लोहा हज़रत ख़ब्बाब के सिर पर रखने लगी। लोहे का काम था। लोहे को भट्टी में डालते थे तो वह गर्म लोहा उनके सिर पर रखने लगी। हज़रत ख़ब्बाब ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस की शिकायत की तो आप फ़रमाया :अल्लाह ख़ब्बाब की मदद कर। आप ने दुआ की। अत: नतीजा यह हुआ कि एक रिवायत में है कि उनकी मालिका उम्मे अन्मार जो थी उस के सिर में कोई बीमारी पैदा हो गई और वह कुत्तों की तरह आवाज़ें निकालती थी। इस से कहा गया कि तू दाग़ लगवा ले। अर्थात अपने सिर प गर्म लोहा लगवा। अत: हज़रत ख़ब्बाब रज़ि गर्म लोहे से इस के सर को दाग़ते थे। मजबूर हुई तो फिर वह हज़रत ख़ब्बाब के द्वारा अपने सिर पर गर्म लोहा लगवाती थी।

(उसदुल ग़ाब फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 148 ख़ब्बाब बिन अल्अरत दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

अबू लैला कुंदी से रिवायत है, वह कहते हैं कि हज़रत ख़ब्बाब रज़ि हज़रत उमर रज़ि के पास आए। हज़रत उमर रज़ि ने उनको कहा कि क़रीब आ जाओ क्योंकि सिवाए अम्मार बिन यासिर के इस मज्लिस का तुमसे ज़्यादा मुस्तहिक़ कोई नहीं। हज़रत ख़ब्बाब रज़ि अपनी पीठ के वे निशान दिखाने लगे जो मुशरिकीन के तकलीफ़ देने से पड़ गए थे। तबक़ात अलकुबरा की यह रिवायत है।

(अत्तबक़ातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 122 ख़ब्बाब बिन अरत दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

एक और जगह कमर के ज़ख़्म दिखाने के बारे में ज़रा तफ़सील से इस तरह रिवायत आती है। शअबी से रिवायत है कि हज़रत ख़ब्बाब रज़ि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि के पास आए। उन्होंने हज़रत ख़ब्बाब रज़ि को अपनी बैठने के स्थान पर बिठाया और फ़रमाया ज़मीन पर कोई शख़्स इस मज्लिस का उनसे ज़्यादा मुस्तहिक़ नहीं सिवाए एक शख़्स के। हज़रत ख़ब्बाब रज़ि ने कहा हे अमीरुल मोमनीन !वह कौन है तो हज़रत उमर औने फ़रमाया वह बिलाल है। हज़रत ख़ब्बाब रज़ि ने हज़रत उमर रज़ि से कहा कि हे अमीरुल मोमेनीन !वह मुझसे ज़्यादा मुस्तहिक़ नहीं है क्योंकि बिलाल जब मुशरिकों के हाथ में थे तो उनका कोई न कोई मददगार था जिसके द्वारा अल्लाह तआला उनको बचा लिया करता था मगर मेरे लिए कोई न था जो मेरी हिफ़ाज़त करता। एक रोज़ मैंने ख़ुद को इस हालत में देखा कि लोगों ने मुझे पकड़ लिया और मेरे लिए आग जलाई। फिर उन्होंने मुझे इस में डाल दिया। हज़रत ख़ब्बाब कहते हैं कि एक रोज़ मेरी यह हालत थी। मैंने अपने आपको इस हालत में देखा कि लोगों ने मुझे पकड़ लिया। मेरे लिए आग जलाई और फिर इस में मुझे डाल दिया। आग के कोयलों पर जो गर्म कोयले थे एक आदमी ने मुझे इस में फेंक के अपना पांव मेरे सीने पे रख दिया। लोगों ने मुझे इस में फेंक दिया और इस के बाद एक आदमी ने अपना पांव मेरे सीने पर रख दिया तो मेरी कमर ही थी जिसने मुझे गर्म ज़मीन से बचाया या कहा कि मेरी कमर ही थी जिसने ज़मीन को ठंडा किया। फिर उन्होंने अपनी पीठ पर से कपड़ा हटाया तो वह बरस की तरह सफ़ैद थी।

(तबक़ात इबन-ए-सअद भाग 3 पृष्ठ 123 ख़ब्बाब बिन अरतदारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)अर्थात गर्म कोयलों पर लिटाया तो कोई चीज़ उन कोयलों को ठंडा करने वाली नहीं थी। जिस्म की जो खाल और चर्बी थी वही पिघल के इस को ठंडा कर रही थी।

फिर इस बारे में एक रिवायत इस तरह भी है। शअबी कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि ने हज़रत ख़ब्बाब रज़ि से उन मुसीबतों के बारे में पूछा जो उन्हें मुशरिकीन से पहुंचते थे तो उन्होंने कहा कि हे अमीरुल मोमनीन मेरी पीठ देखें। जब हज़रत उमर रज़ि ने पीठ देखी तो फ़रमाया मैंने ऐसी पीठ किसी की नहीं देखी। हज़रत ख़ब्बाब रज़ि ने बताया कि आग जलाई जाती थी और इस पर मुझे घसीटा जाता था और इस आग को और कोई चीज़ न बुझाती थी सिवाए मेरी कमर की चर्बी के।

(उसदुल ग़ाब फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 148 ख़ब्बाब बिन अल्अरत दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने हज़रत ख़ब्बाब रज़ि के बारे में जो बयान किया है वह इस तरह है। आप बयान करते हैं कि

"याद रखना चाहिए कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान ला कर जिन लोगों ने सबसे ज़्यादा तकलीफ़ें उठाएं वे ग़ुलाम ही थे। अत: ख़ब्बाब बिन अल अरत रज़ि एक ग़ुलाम थे जो लोहार का काम करते थे। वह बहुत आरम्भिक दिनों में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान ले आए। लोग उन्हें सख़्त तकालीफ़ देते थे यहां तक कि उन्ही की भट्टी के कोयले निकाल कर उन पर उन्हें लिटा देते थे और ऊपर से छाती पर पत्थर रख देते थे ताकि आप कमर ना हिला सकें। उनकी मज़दूरी का रुपया जिन लोगों के ज़िम्मा था वे रुपया अदा करने से मुनकिर हो गए। मगर बावजूद इन माली और जानी नुक़्सानों के आप एक मिनट के लिए भी शंकित न हुए और ईमान पर साबित-क़दम रहे। आप की पीठ के निशान आख़िर उम्र तक क़ायम रहे। अत: हज़रत उमर रज़ि की हुकूमत के दिनों में उन्होंने अपनी पिछली मुसीबतों का ज़िक्र किया तो उन्होंने इन से पीठ दिखाने को कहा। जब उन्होंने पीठ पर से कपड़ा उठाया तो तमाम पीठ पर ऐसे सफ़ैद दाग़ नज़र आए जैसे कि बरस के दाग़ हैं।"

(दुनिया का मुहसिन, अन्वारुल उलूम भाग 10 पृष्ठ 273)

फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो एक और जगह फ़रमाते हैं कि "एक बार एक आरम्भिक नए मुस्लमान ग़ुलाम ख़ब्बाब रज़ि की पीठ नंगी हुई तो उनके साथियों ने देखा कि उनकी पीठ का चमड़ा इन्सानों जैसा नहीं, जानवरों जैसा है। वे घबरा गए और उनसे पूछा कि आप को यह क्या बीमारी है? वह हँसे"अर्थात हज़रत ख़ब्बाब रज़ि हँसे' और कहा बीमारी नहीं यह यादगार है इस वक़्त की जब हम नए मुस्लमान ग़ुलामों को अरब के लोग मक्का की गलियों में सख़्त और खुरदुरे पत्थरों पर घसीटा करते थे और निरन्तर यह ज़ुलम हम पर किया जाता था। इसी के नतीजा में मेरी पीठ का चमड़ा यह शक्ल धारण कर गया है।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अन्वारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 193)

इन आरम्भिक मुस्लमानों को जो ग़रीब भी थे और अक्सर ग़ुलाम भी थे और इस्लाम क़बूल करने के बाद जिन तकलीफ़ों में से उन्हें गुज़रना पड़ा जिसका ज़िक्र अभी हमने हज़रत ख़ब्बाब रज़ि के हवाले से सुना है कि कभी आग पर लिटा दिया जाता, कभी उनको पत्थरों पे घसीटा जाता। यह तकलीफ़ें तो उन्होंने बर्दाश्त कर लीं

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَاۤ اِنَّنَاۤ اٰمَنَّا فَاغۡفِرۡ لَنَا ذُنُوۡبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अत: हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

और जब बाद में इस्लाम की तरक़्क़ी हुई तो उस वक़्त अल्लाह तआला ने किस तरह नवाज़ा और उनका दुनियावी स्थान भी किस तरह क़ायम फ़रमाया उस का ज़िक्र करते हुए एक अवसर पर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने इस तरह फरमाया है कि

"हज़रत उमर रज़ि एक बार अपने ज़माना ख़िलाफ़त में मक्का तशरीफ़ लाए तो शहर के बड़े बड़े रसईस जो मशहूर ख़ानदानों में से थे उनके मिलने के लिए आए। उन्हें ख़्याल पैदा हुआ कि हज़रत उमर रज़ि हमारे ख़ानदानों से अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं। इसलिए अब जबकि वह ख़ुद बादशाह हैं हमारे ख़ानदानों का भी पूरी तरह सम्मान करेंगे और हम फिर अपनी गुम हुई इज़्ज़त को हासिल कर सकेंगे। अत: वे आए और उन्होंने आप से बातें शुरू कर दें। अभी वे बातें कर ही रहे थे कि हज़रत उमर रज़ि की मज्लिस में हज़रत बिलाल रज़ि आ गए। थोड़ी देर गुज़री तो हज़रत ख़ब्बाब रज़ि आ गए और इस तरह एक के बाद दूसरे पहले ईमान लाने वाले ग़ुलाम आते चले गए अर्थात शुरू में जो ईमान लाने वाले थे वे ग़ुलाम थे। वे सारे एक के बाद दूसरा आते चले गए। ये वे लोग थे जो इन रईसों के उनके माता पिता के ग़ुलाम रह चुके थे। ये जो नौजवान रईस बैठे थे या उस वक़्त के जो रईस बैठे थे ये सारे आने वाले जो थे ये उनके माता पिता के ग़ुलाम थे। और जब वे ग़ुलाम थे तो उस वक़्त अपनी ताक़त के ज़माने में वे उन पर बहुत अधिक अत्याचार भी किया करते थे। हज़रत उमर रज़ि ने हर ग़ुलाम के आने पर इस का स्वागत किया, जब भी ये लोग हज़रत ख़ब्बाब रज़ि या हज़रत बिलाल रज़ि इत्यादि आते थे, जब भी ये बहुत सारे पहले ईमान लाने वाले लोग आए और जो ग़ुलाम भी थे किसी ज़माने में। जब भी वे मजलिस में आते तो हज़रत उमर रज़ि बड़ी एहमीयत से उनका स्वागत करते। आप लिखते हैं कि हज़रत उमर रज़ि ने हर ग़ुलाम के आने पर इस का स्वागत किया और रईसों से कहा कि आप ज़रा पीछे हो जाएं। रईस मज्लिस में आगे बैठे होते थे जब ये पुराने ईमान लाने वाले आते थे तो आप इन रईसों को जो मक्का के रईस थे कहते ज़रा पीछे हट जाओ उनको आगे बैठने दो यहां तक कि वे नौजवान रईस जो आप से, हज़रत उमर रज़ि से मिलने आए थे हटते हटते दरवाज़े तक पहुंच गए। इस ज़माने में कोई बड़े बड़े हाल तो होते नहीं थे, एक छोटा सा कमरा होगा और चूँकि वे सब इस में समा नहीं सकते थे इसलिए पीछे हटते हटते इन रईसों को जूतियों में बैठना पड़ा। जब मक्का के वे रईस जूतियों में जा पहुंचे और उन्होंने अपनी आँखों से देखा कि किस तरह एक के बाद एक मुस्लमान ग़ुलाम आया और इस को आगे बिठाने के लिए उन लोगों को या रईसों को पीछे हटने का हुक्म दिया गया तो उनके दिल को सख़्त चोट लगी।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि लिखते हैं कि ख़ुदा तआला ने भी इस वक़्त कुछ ऐसे सामान पैदा कर दिए कि एक के बाद दूसो कई ऐसे मुस्लमान आ गए जो किसी ज़माना में कुफ़्फ़ार के ग़ुलाम रह चुके थे। अगर एक-बार ही वे रईस पीछे हटते तो उनको एहसास भी न होता मगर चूँकि बार-बार उनको पीछे हटना पड़ा इसलिए वे इस बात को बर्दाश्त न कर सके और उठकर बाहर चले गए। बाहर निकल कर वे एक दूसरे से शिकायत करने लगे कि देखो आज हमारा कैसा अपमान हुआ है। एक एक ग़ुलाम के आने पर हमको पीछे हटाया गया है यहां तक कि हम जूतियों में जा पहुंचे। इस पर उनमें से एक नौजवान बोला इस में किस का क़सूर है? उमर रज़ि का है या हमारे बाप दादा का है? अगर तुम सोचो तो मालूम होगा कि इस में हज़रत उमर रज़ि का तो कोई क़सूर नहीं। यह हमारे बाप दादा का क़सूर था जिसकी आज हमें सज़ा मिली क्योंकि ख़ुदा ने जब अपना रसूल मबऊस फ़रमाया तो हमारे बाप दादा ने विरोध किया मगर इन ग़ुलामों ने इस को क़बूल किया और हर किस्म की तकलीफ़ों को ख़ुशी से बर्दाश्त किया। इसलिए आज अगर हमें मज्लिस में अपमानित होना पड़ा है तो इस में उमर रज़ि का कोई क़सूर नहीं हमारा अपना क़सूर है। इस की यह बात सुनकर दूसरे कहने लगे कि हम ने यह तो मान लिया कि यह हमारे बाप दादा के क़सूर का नतीजा है मगर क्या इस आपमान के दाग़ को दूर करने का कोई माध्यम भी है या कोई नहीं है? इस पर सब ने आपस में मश्वरा किया कि हमारी समझ में तो कोई बात नहीं आती चलो हज़रत उमर रज़ि से ही पूछ लें कि इस का क्या इलाज है। अत: वो हज़रत उमर रज़ि के पास आए और कहने लगे कि आज जो कुछ हमारे साथ हुआ है इस को आप भी ख़ूब जानते हैं और हम भी ख़ूब जानते हैं। हज़रत उमर रज़ि फ़रमाने लगे कि माफ़ करना में मजबूर था क्योंकि ये वे लोग थे जो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मज्लिस में सम्माननीय थे। शायद तुम्हारे ग़ुलाम होंगे लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मज्लिस में ये लोग सम्माननीय थे। इसलिए मेरा भी फ़र्ज़ था कि मैं उनकी इज़्ज़त करता। उन्होंने कहा हम जानते हैं यह हमारे ही क़सूर का नतीजा है लेकिन आया इस दोष को मिटाने का भी कोई माध्यम है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि फ़रमाते हैं कि हम लोग तो इस का अंदाज़ा नहीं लगा सकते। आजकल उस का अंदाज़ा लगाना बहुत मुश्किल है कि वे लोग जो मक्का के रईसों में से थे उन्हें मक्का मैं किस क़दर प्रभुत्व हासिल था लेकिन हज़रत उमर रज़ि उनके ख़ानदानी हालात को बख़ूबी जानते थे। आप मक्का में पैदा हुए थे अर्थात हज़रत उमर रज़ि मक्का में पैदा हुए थे और मक्का में बड़े हुए थे इसलिए हज़रत उमर रज़ि जानते थे कि इन नौजवानों के बाप दादा किस क़दर इज़्ज़त रखते थे। आप जानते थे कि कोई शख़्स उनके सामने आँख उठाने की भी जुर्रत नहीं कर सकता था और आप जानते थे कि उन्हें किस क़दर रोब और दबदबा हासिल था। जब उन्होंने यह बात कही तो हज़रत उमर के सामने एक-एक कर के ये समस्त घटनाएं आ गईं और आप पर रिक़्क़त तारी हो गई। इस वक़्त आप रिक़्क़त की अधिकता के कारण से बोल भी न सके सिर्फ़ आप ने हाथ उठाया और उत्तर की तरफ़ उंगली से इशारा किया जिसका अर्थ यह था कि उत्तर में यानी शाम में कई इस्लामी जंगें हो रही हैं। अगर तुम इन जंगों में शामिल हो जाओ तो मुम्किन है इस का कफ़्फ़ारा हो जाए। अत: वे वहां से उठे और शीघ्र ही इन जंगों में शामिल होने के लिए चल पड़े। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि लिखते हैं कि तारीख़ बताती है कि वे रईसों के बेटे जितने थे उनमें से एक शख़्स भी ज़िन्दा वापस नहीं आया। सब उसी जगह शहीद हो गए और इस तरह उन्होंने अपने ख़ानदानों के नाम पर से अपमान के दाग़ को मिटा दिया।

(उद्धरित तफ़सीर कबीर भाग 8 पृष्ठ 65ता67)

नतीजा यही है कि क़ुर्बानियां करनी पड़ती हैं। जिन्होंने शुरू में क़ुर्बानियां कीं उनको इज़्ज़त मिली। बाद में अगर आए और इस अपमान के दाग़ को मिटाना है तो फिर भी क़ुर्बानियों से ही मिटाया जा सकता है

जब हज़रत ख़ब्बाब रज़ि और हज़रत मिक़दाद बिन अमरो रज़ि ने मदीना हिजरत की तो ये दोनों हज़रत कुलसूम बिन इलहदम के यहाँ ठहरे और हज़रत कुलसूम रज़ि की वफ़ात तक उन्हीं के घर ठहरे रहे। हज़रत कुलसूम रज़ि की वफ़ात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बदर की तरफ़ निकलने से कुछ अर्से पहले हुई थी। फिर वे हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि की तरफ़ चले गए यहां तक कि पाँच हिज्री में बनू क़ुरैज़ा को फ़तह किया गया

(अत्तबक़ातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 123 ख़ब्बाब बिन अल्अरत दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)(अत्तबक़ातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 2 पृष्ठ 57 ग़ज़वा रसूलुल्लाह अली बनी क़ुरैज़ा दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ख़ब्बाब रज़ि और हज़रत ख़राश बिन समा के आज़ाद किए गए ग़ुलाम हज़रत तमीम रज़ि के बीच भाईचारा क़ायम फ़रमाया। एक दूसरे कथन के अनुसार आप ने हज़रत ख़ब्बाब रज़ि की भाईचारा हज़रत जब बन अतीक रज़ि के साथ क़ायम फ़रमाई। अल्लामा इब्न अब्दुल बर्रे के नज़दीक पहली रिवायत ज़्यादा सही है

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

(अल इस्तेआब फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 21 ख़ब्बाब बिन अल्अरत दार अलजील बेरूत)

हज़रत ख़ब्बाब रज़ि ग़ज़वा बदर, अहद और ख़ंदक़ सहित अन्य समस्त जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सम्मलित रहे।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 123 ख़ब्बाब बिन अल्अरत दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

अबू ख़ालिद वर्णन करते हैं कि एक दिन हम मस्जिद में बैठे हुए थे कि हज़रत ख़ब्बाब रज़ि आए और ख़ामोशी से बैठ गए। लोगों ने उनसे कहा कि आप के दोस्त आप के पास इकट्ठे हुए हैं ताकि आप उनसे कुछ वर्णन करें या उन्हें कुछ हुक्म दें। हज़रत ख़ब्बाब रज़ि ने कहा मैं उन्हें किस बात का हुक्म दूं! ऐसा न हो कि मैं उन्हें किसी ऐसी बात का हुक्म दूं जो मैं ख़ुद नहीं करता।

(उसदुल ग़ाब फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 149 ख़ब्बाब बिन अल्अरत दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

इन लोगों का अल्लाह तआला के ख़ौफ़ और तक़्वा का यह स्तर था

अब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब अपने पिता से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक बार नमाज़ पढ़ाई और इस को बहुत लंबा किया। लोगों ने निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप ने ऐसी नमाज़ पढ़ाई है कि इस जैसी पहले कभी नहीं पढ़ाई। आप ने फ़रमाया हाँ यह रग़बत और ख़ौफ़ की नमाज़ है। मैंने इस में अल्लाह तआला से तीन चीजें मांगी हैं। अल्लाह तआला ने मुझे दो प्रदान की हैं और एक को रोके रखा है। मैंने अल्लाह से मांगा कि मेरी उम्मत को अकाल से हलाक न करे जो अल्लाह ने प्रदान फ़र्मा दी। मैंने अल्लाह से यह मांगा कि मेरी उम्मत पर कोई दुश्मन उनके शत्रुओं में से मुसल्लत ना किया जाए जो अल्लाह तआला ने मुझे प्रदान फ़र्मा दी। बहैसीयत उम्मत आज भी उम्मत क़ायम है और अगर कोई मुसल्लत करते हैं तो यह ख़ुद हुकूमतें अपने ऊपर मुसल्लत करती हैं। बहैसीयत उम्मत अल्लाह तआला के फ़ज़ल से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत क़ायम है। और फिर फ़रमाया और मैंने अल्लाह से मांगा कि मेरी उम्मत आपस में एक दूसरे से न लड़े। यह अल्लाह ने मुझे प्रदान नहीं की।

(सुनन अत्तरिमज़ी अबवाबुल फ़ितन बाब माजा फ़ी सवालुन्नबी सलासा फ़ी उम्मत हदीस नम्बर 2175)

और नतीजा आज यह है कि फ़िर्क़ा बाज़ीयां, कुफ़्र के फ़तवे यह सब कुछ चल रहा है

तारिक़ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अस्हाब की एक जमाअत ने हज़रत ख़ब्बाब रज़ि की इयादत की। इन लोगों ने कहा कि हे अबू अब्दुल्लाह ख़ुश हो जाओ कि तुम अपने भाइयों के पास हौज़े कौसर पर जाते हो। हज़रत ख़ब्बाब रज़ि ने कहा कि तुम ने मेरे सामने उन भाइयों का ज़िक्र किया है जो गुज़र गए हैं और उन्होंने अपने अज्रों में से कुछ न पाया और हम उनके बाद बाक़ी रहे यहां तक कि हमें दुनिया से वो कुछ हासिल हो गया जिसके बारे में हम डरते हैं कि शायद यह हमारे पिछले किए गए कर्मों का सवाब है जो दुनिया हमें मिल गई। यहीं दुनिया में सवाब मिल गया। हज़रत ख़ब्बाब रज़ि बहुत शदीद और लम्बी बीमारी में मुब्तला रहे।

(उसदुल ग़ाब फ़ी मअरफतिस्सहाबाा भाग 2 पृष्ठ 149 ख़ब्बाब बिन अर्त दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

हारिस बिन मुज़रिब से रिवायत है कि मैं हज़रत ख़ब्बाब रज़ि के पास उनकी इयादत के लिए आया। वह सात जगह से ईलाज की ख़ातिर दाग़ दिए गए थे। मैंने उन्हें कहते सुना कि अगर मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते न सुना होता कि किसी के लिए जायज़ नहीं कि वह मौत की तमन्ना करे तो मैं इस की तमन्ना करता अर्थात इतनी तकलीफ़ में थे। उनका कफ़न लाया गया जो क़बती कपड़े का था। बारीक कपड़ा जो मिस्र में तैयार होता था तो वह रोने लगे। फिर उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चाचा हज़रत हमज़ा रज़ि को एक चादर का कफ़न दिया गया जो उनके पास पांव पर खींची जाती तो सिर की तरफ से सिकुड़ जाती और जब सिर की तरफ़ खींची जाती तो पांव की तरफ़ से सिकुड़ जाती यहां तक कि उन पर इज़्ख़र घास डाली गई। मैंने अपने आपको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ इस हाल में देखा कि मैं एक दीनार का मालिक था न एक दिरहम का। अर्थात कुछ भी मेरे पास नहीं था ना दीनार था न दिरहम था। एक दीनार भी नहीं था और अब क्या हाल है। आप ने फ़रमाया कि अब मेरे मकान के कोने में संदूक़ में पूरे चालीस हज़ार दिरहम हैं और मैं डरता हूँ कि हमारी तय्यब चीज़ें हमें इस ज़िन्दगी में न दे दी गई हों।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 123 ख़ब्बाब बिन अल्अरत दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)(लुगातुल हदीस भाग 3 पृष्ठ 484 अली आसिफ़ प्रिंटर्ज़ लाहौर 2005 ई)

हज़रत ख़ब्बाब रज़ि बयान करते हैं कि हमने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हिजरत की। हम अल्लाह तआला ही की रज़ा चाहते थे और हमारा बदला अल्लाह के ज़िम्मा हो गया। हम में से ऐसे भी थे जो वफ़ात पा गए और उन्होंने अपने अज्र से कुछ नहीं खाया। उनमें से हज़रत मसअब बिन उमैर रज़ि भी हैं। और हम में से ऐसे भी हैं जिनका फल पक गया और वे इस फल को चुन रहे हैं। हज़रत मसअब रज़ि उहद के दिन शहीद हुए थे और हमें सिर्फ एक ही चादर मिली थी कि जिससे हम उनको कफ़नाते। जब हम इस से उनका सिर ढाँपते तो उनके पांव निकल जाते और अगर उनके पांव ढाँपते तो उनका सिर निकल जाता तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हम उनका सिर ढाँप दें और उनके पांव पर इज़ख़र घास दें।

(सही अलबख़ारी किताबलि जनायज़ हदीस1276)

ज़ैद बिन वह ने बयान किया कि हम हज़रत अली रज़ि के साथ आ रहे थे जब वह जंग के बाद सफ़्फ़ीन से लौट रहे थे यहां तक कि जब आप कूफ़ा के दरवाज़े पर पहुंचे तो क्या देखते हैं कि हमारे दाहिनी तरफ़ सात क़ब्रें हैं। हज़रत अली रज़ि ने पूछा कि ये क़ब्रें कैसी हैं। लोगों ने कहा कि हे अमीरुल मोमेनीन आप के सफ़्फ़ीन के लिए निकलने के बाद ख़ब्बाब रज़ि की वफ़ात हो गई। उन्होंने वसीयत की कि कूफ़ा से बाहर दफ़न किया जाए। वहां लोगों का दस्तूर था कि अपने मर्दों को अपने सेहनों में और अपने घरों के दरवाज़ों के साथ दफ़न किया करते थे मगर जब उन्होंने हज़रत ख़ब्बाब रज़ि को देखा कि उन्होंने बाहर दफ़न करने की वसीयत की तो लोग भी दफ़न करने लगे। हज़रत अली रज़ि ने कहा अल्लाह ख़ब्बाब पर रहम करे वह अपनी ख़ुशी से इस्लाम लाए। और उन्होंने इताअत करते हुए हिजरत की। और एक मुजाहिद के तौर पर ज़िन्दगी गुज़ारी। और जिस्मानी तौर पर वह आज़माऐ गए। और जो शख़्स नेक काम करे अल्लाह उस का बदला ज़ाए नहीं करता अर्थात उनकी जिस्मानी तकलीफ़ें बीमारीयां बहुत लंबी चलें। फिर हज़रत अली रज़ि ने फ़रमाया कि और जो शख़्स नेक काम करे अल्लाह उस का बदला नष्ट नहीं करता। हज़रत अली रज़ि इन क़ब्रों के नज़दीक गए और कहा हे रहने वालो जो मोमिन और मुस्लमान हो तुम पर सलामती हो। तुम आगे जा कर हमारे लिए सामान करने वाले हो और हम तुम्हारे पीछे पीछे शीघ्र तुमसे मिलने वाले हैं। हे अल्लाह! हमें और उन्हें बख़्श दे और अपने अफ़्व के मध्यम से हमसे और उनसे दरगुज़र कर। ख़ुशख़बरी हो इस शख़्स को जो आख़िरत को याद करे और हिसाब के लिए कर्म करे और जो उस की ज़रूरत को पूरी करने वाली चीज़ हो वह इस पर क़नाअत करे और सम्मान वाला अल्लाह को राज़ी रखे।

(उसदुल ग़ाब फ़ी अलसहाब भाग 2 पृष्ठ 149 ख़ब्बाब बिन अल्अरत दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई) हज़रत अली रज़ि ने वहां यह दुआ की

हज़रत ख़ब्बाब रज़ि की वफ़ात 37 हिज्री में 73 वर्ष की उम्र में हुई थी।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 124 ख़ब्बाब बिन अल्अरत दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

(अलफ़ज़ल इंटरनेशनल 22 मई 2020 ई पृष्ठ 11 से 14)

☆ ☆
☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

पृष्ठ 2 का शेष

हामिद करीम महमूद साहिब मुबल्लिग़ नन स्पैट हॉलैंड को याद फ़रमाया। दोनों ने हुज़ूर अनवर से दफ़्तरी मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर ने कुछ ज़रूरी मामले के हवाला से हिदायतें फ़रमाईं।

हॉलैंड से फ्रांस के लिए रवानगी

हॉलैंड के विभिन्न क्षेत्रों से जमाअत के लोग मर्द औरतें हुज़ूर अनवर को अल-विदा कहने के लिए सुबह से जमाअत के मर्कज़ बैयतुन्नूर जमा होना शुरू हो गए थे 11 बजकर 25 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायशगाह से बाहर तशरीफ़ लाए और अपना हाथ ऊँचा करके सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और दुआ करवाई और क़ाफ़ला नन स्पैट(NunsPeet) से फ्रांस के लिए रवाना हुआ

नन स्पैट (हॉलैंड) से फ्रांस के शहर Trie-Chateau (जहां जमाअत फ्रांस का नया ख़रीद गया सैंटर "बैयतुल अता "है)का दूरी 536 किलोमीटर है। 130 किलोमीटर का दूरी तय करने के बाद हॉलैंड का बॉर्डर पार कर के बेल्जियम में दाख़िल हुए।

प्रोग्राम के अनुसार जमाअत फ्रांस ने बेल्जियम के शहर Korjrijk के निकट स्थित क़स्बा Sint-Anna के एक होटल "Hostellerie Klokhof" मैं नमाज़ ज़ुहर तथा प्रभाव की अदायगी और दोपहर के खाने का प्रबन्ध किया हुआ था। फ्रांस से आने वाले वफ़द ने जिसमें आदरणीय अमीर साहिब फ्रांस इशफ़ाक़ रब्बानी साहिब, आदरणीय फ़हीम अहमद नयाज़ साहिब जनरल सैक्रेटरी,आदरणीय असलम दो बोरी साहिब नायब अमीर जमाअत फ्रांस, आदरणीय मंसूर अहमद वीनस साहिब नैशनल सैक्रेटरी तर्बीयत, आदरणीय जमीलुर्रहमान साहिब सदर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया फ्रांस अपनी सिक्योरिटी टीम के साथ शामिल थे।

हॉलैंड का बॉर्डर पार कर के बेल्जियम में दाख़िल होने के बाद और अधिक155 किलोमीटर का सफ़र तय कर के 2 बजकर15 मिनट पर क़स्बा Sint-Anna के होटल Hostellerie Klokhof आया। जहां अमीर साहिब फ्रांस ने अपने वफ़द के साथ हुज़ूर अनवर का स्वागत किया और स्वागत कहा और हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। यहां नमाज़ों की अदायगी के लिए एक हाल में प्रबन्ध किया गया था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने 2 बजकर 40 मिनट पर तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा करके पढ़ाई।

नमाज़ों की अदायगी और दोपहर के खाने के बाद आगे फ्रांस रवानगी का प्रोग्राम था। रवानगी से पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए हॉलैंड से इस स्थान तक क़ाफ़ला के साथ आने वाले वफ़द को हाथ मिलाने के सौभाग्य से नवाज़ा। हॉलैंड से आदरणीय हिबतुन्नूर फरहा खानह साहिब अमीर जमाअत हॉलैंड, आदरणीय अब्दुल हमीद दरफ़ीलदन साहिब नायब अमीर हॉलैंड। आदरणीय नईम अहमद वड़ैच साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज हॉलैंड, आदरणीय ज़ुबैर अकमल साहिब नैशनल सैक्रेटरी तालीमुल क़ुरआन वक़्फ़ आरज़ी, आदरणीय ज़िलुर्रहमान साहिब इंटरनल आडीटर, आदरणीय समर अहमद नासिर साहिब सैक्रेटरी जायदाद, आदरणीय चौधरी मुबश्शिर अहमद साहिब अफ़्सर जलसा सालाना,आदरणीय चौधरी लईक अहमद साहिब,आदरणीय उसमान अहमद साहिब सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया हॉलैंड अपनी ख़ुद्दाम की सिक्योरिटी टीम के साथ यहां तक हुज़ूर अनवर को विदा कहने के लिए आए थे। अब यहां से इस वफ़द की हॉलैंड के लिए वापसी थी

3 बजकर 35 मिनट पर हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई और क़ाफ़िला आगे फ्रांस के लिए रवाना हुआ। अब यहां से फ्रांस की गाड़ी क़ाफ़िला को Lead कर रही थी। यहां से "बैयतुल अता"(फ्रांस)की दूरी 251 किलोमीटर है।

फ्रांस में आना

लगभग 3 घंटे 5 मिनट का सफ़र तय करने के बाद साढ़े छ: बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ जमाअत फ्रांस के एक नए सैंटर बैयतुल अता में पधारे ।

बैयतुल अता में तशरीफ़ आवरी के बाद जैसे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ कार से बाहर तशरीफ़ लाए तो फ्रांस की विभिन्न जमाअतों से आए हुए जमाअत के लोग मर्द औरतें और बच्चे, बच्चियों ने बड़े पुरजोश अंदाज़ में अपने प्यारे आक़ा का स्वागत किया। अक़ीदत और मुहब्बत से हर तरफ़ हाथ ऊंचा कर रहे थे और अहलन व सहलन व मरहबा की आवाज़ें ऊंची हो रही थीं।

एक तरफ़ जमाअत के लोग बड़े जोश वाले अंदाज़ में अपने आक़ा को स्वागत कह रहे थे तो दूसरी तरफ़ औरतें दर्शन के सौभाग्य से फ़ैज़ पा रही थीं। बच्चे और बच्चियां विभिन्न ग्रुपों के रूप में स्वागत गीत और दुआइया नज़्में पढ़ रहे थे।

बैयतुल अता का उद्घाटन

प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने जमाअत फ्रांस के इस नए सैंटर "बैयतुल अता "की तख़्ती से कपड़ा हटाया और दुआ करवाई। दुआ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

अपने प्यारे आक़ा का स्वागत करने वाले यह दोस्त और फ़ैमिलीज़ पैरिस, Epernay सड़ास बर्ग और Lyon से आए थे। पैरिस की जमाअतों से वाले 80 किलोमीटर और Epernay से आने वाले 100 किलोमीटर जब कि सड़ास बर्ग से वाले 441 किलोमीटर और Lyon से आने वाले 449 किलोमीटर की लम्बी दूरी तय कर के पहुंचे थे।

इस क्षेत्र के मेयर David Didier साहिब भी हुज़ूर अनवर के स्वागत के लिए आए हुए थे। महोदय ने हुज़ूर अनवर को स्वागत कहा और निवेदन किया कि हुज़ूर इस छोटे से क़स्बा में तशरीफ़ लाए हैं। हुज़ूर अनवर के पूछने पर मेयर ने बताया कि वह थोड़ा सा नीचे रहते हैं। हुज़ूर अनवर ने मेयर का शुक्रिया अदा किया।

नमाज़ों की अदायगी के लिए यहां एक बेसमेंट हाल को बतौर मस्जिद तैय्यार किया गया है। जिस में चार सौ के लगभग लोग नमाज़ अदा कर सकते हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने 8 बजकर15 मिनट पर तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाईं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

जमाअत अहमदिया फ्रांस का यह नया सैंटर "बैयतुल अता ' फ्रांस के प्रान्त Hauts-De-France के ज़िला (Department) Oise के शहर Trie-Chateau में स्थित है। इस ज़मीन का क्षेत्रफल 55700 वर्ग मीटर, लगभग पौने छ: हेक्टर है। यह स्थान साल 2014 ई में छ: लाख 50 हज़ार यूरो की लागत से ख़रीदी गई। यह स्थान ऊंचाई पर स्थित है और पेरिस के मौजूदा मिशन हाऊस से 60 किलोमीटर के दूरी पर स्थित है और शहर Trie के रेलवे स्टेशन से दो किलोमीटर की दूरी पर है। यह स्थान एक रशियन फ़ैमिली का थी जो घोड़ों और बड़े परिंदों का कारोबार करते थे।

इस स्थान का इंतिहाई कम क़ीमत पर अता होना एक चमत्कार से कम नहीं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने इस स्थान का नाम रखते हुए, अमीर साहिब फ्रांस को फ़रमाया था कि जब अल्लाह तआला ने अता की है तो फिर "बैयतुल अता ' नाम रख लें

इस स्थान में बड़ी व्यापक तथा बड़ी इमारतें, रिहायशी हिस्से और हाल इत्यादि पहले से बने हुए हैं। यह सब 1400 वर्ग मीटर के क्षेत्रफल पर मौजूद हैं।

एक बड़ी व्यापक तथा बड़ी दो मंज़िला इमारत है। इसके अंदर तीन हाल मौजूद हैं। औरतें अपने इज्तिमा, रिहायश, ख़ुराक और अन्य प्रोग्राम इन्हीं हालों में करती हैं।

एक बड़ी इमारत, जिस में बेसमेंट के अतिरिक्त तीन मंज़िलें हैं। उसकी दो मंज़िलों पर गेस्ट रुम मौजूद हैं। जिनकी संख्या 9 है और चार ग़ुसल ख़ाने भी हैं, लाऊंज है और मीटिंग रुम भी है। ग्रांऊड फ़्लोर पर बहुत बड़ा जमाअत का किचन भी है। जबकि बेसमेंट अभी इस्तेमाल हो रहा है।

इसी इमारत के साथ जुड़े हुए इमारत में इशाअत विभाग और ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट के दफ़्तर हैं ,बुक स्टोर भी है और एक हिस्सा में ग़ुस्ल-ख़ाने और वुज़ू करने के लिए स्थान बनाए गए हैं।

एक दूसरी इमारत में रिहायशी अपार्टमंट्स हैं। इस इमारत से जुड़े हुए एक हाल को मस्जिद के तौर पर तैय्यार किया गया है। इस में चार सौ से अधिक लोग नमाज़ अदा कर सकते हैं।

तीन विभिन्न इमारतों के मध्य स्थान को फ़र्श बना कर दृढ़ किया गया है और इस के ऊपर एक शैड बना हुआ है। इस शैड के नीचे भी ज़रूरत के समय तीन सौ के लगभग लोग नमाज़ अदा कर सकते हैं और सैंकड़ों लोग खाना इत्यादि भी खा सकते हैं। इस के अतिरिक्त इस व्यापक तथा चौड़ी ज़मीन में विभिन्न स्थानों पर कुछ Huts बने हुए हैं।

इस ज़मीन के दाएं और सामने की तरफ़ खेत हैं। और बाएं तरफ़ एक पड़ोसी का घर है। इस ज़मीन के पिछले हिस्सा में जहां जलसा गाह है, एक बहुत बड़ा घना जंगल है। जिसका क्षेत्रफल लगभग दो लाख 50 हज़ार वर्ग मीटर है और इस की क़ीमत एक लाख यूरो है। हुज़ूर अनवर ने इस की ख़रीद की भी मंज़ूरी प्रदान

फ़रमाई हुई है। जमाअत फ्रांस ने दस हज़ार यूरो का बयाना अदा कर दिया हुआ है। चूँकि इस जंगल को रास्ता सिर्फ हमारी ज़मीन से ही लगता है और अगर किसी ने जंगल में जाना हो तो हमारी ज़मीन से गुज़र कर ही जाना होगा। इसलिए उस को भी ख़रीदने का फ़ैसला किया गया।

फ्रांस की राजधानी पैरिस (Paris) से सिर्फ़ 60 किलोमीटर के दूरी पर केवल साढ़े छ: लाख यूरो में इतनी बड़ी ज़मीन की ख़रीद, जिस पर कई बड़ी व्यापक इमारतें बनी हुई हैं, अविश्वसनीय है। इतनी रक़म में तो एक तीन चार बेडरूम का मकान नहीं मिलता। कहां यह कि14 हज़ार वर्ग फुट के क्षेत्रफल पर बड़ी दृढ़ इमारतें मौजूद हैं और बड़ा व्यापक तथा चौड़ी ज़मीन जलसा गाह और उसके सारे इंतिज़ामात के लिए हैं। यह सिर्फ़ और सिर्फ ख़ुदा तआला की तरफ़ से ऐसा इनाम है जो ख़िलाफ़त की बरकत से प्रदान हुआ है।

इसकी ख़रीद में कुछ मुश्किलें आती रही हैं लेकिन हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की दुआओं से समस्त मुश्किलें दूर हुईं और अन्त में यह स्थान जमाअत को मिल गई और और 22 अप्रैल 2014 ई को इस स्थान की जमाअत के नाम रजिस्ट्री भी हो गई। अल्हम्दुलिल्ला अला ज़ालिक।

अमीर साहिब फ्रांस आदरणीय इशफ़ाक़ रब्बानी साहिब इस स्थान की ख़रीद के हवाला से बताते हैं कि हुज़ूर अनवर की मंज़ूरी के बाद एक बड़े स्थान की तलाश शुरू हुई तो मालूम हुआ कि एक एजेंसी में पौने छ: एकड़ का क्षेत्रफल जिस पर इमारतें भी मौजूद हैं। बिकने पर पर लगा हुआ है। सम्पर्क करने के बाद मालिक से 6 लाख 40 हज़ार यूरो में सौदा तय पा गया।

इस के बाद हुज़ूर अनवर की सेवा में मंज़ूरी के लिए लिखा गया जिस पर हुज़ूर अनवर ने इरशाद फ़रमाया "ले लें।"

हम ने सत्तर हज़ार यूरो बयाना देकर मुंतकली के लिए क़ानूनी कार्रवाई शुरू की तो जब इस बात का इल्म कोर्ट को हुआ तो हमें सूचना दी गई कि इस औरत को मकान और यह स्थान बेचने की आज्ञा नहीं है क्योंकि यह बंक करपट है। इस बात का ज़िक्र जब हम ने इस औरत से किया तो इस पर वह बदतमीज़ी पर उतर आई। उसने जानवर भी पाल रखे थे कहने लगी कि मैं आप पर अपने कुत्ते भी छोड़ दूँगी।

दूसरी तरफ़ बैंक ने अदालत से नीलामी की आज्ञा मांगी और हमें नीलामी में बैठने की आज्ञा न मिली। ख़ुदा का करना यह हुआ कि पहली नीलामी पर कोई न आया। चूँकि दूसरी नीलामी पर क़ीमत कम कर दी जाती है। इस पर इस स्थान की मालकिन को फ़िक्र हुई कि क़ीमत कम होने पर अब मुझे तो कुछ भी नहीं मिलेगा। तब उसने अदालत का रुख़ किया कि अगर ऐसा हुआ तो मुझे कुछ नहीं मिलेगा। मेरे दो छोटे बच्चे हैं। पति जेल में है। अदालत मेरी मदद करे।

अब इस स्थान की ख़रीद में मुश्किलें बढ़ रही थीं। मैंने कुछ बुज़ुर्गों को भी दुआ का ख़त लिखा। एक बुज़ुर्ग की तरफ़ से ख़त प्राप्त हुआ कि अब आप यह दुआ करें कि हे अल्लाह ख़लीफतुल मसीह तो कहते हैं कि "ले लें" लेकिन यह लोग लेने नहीं देते। अत: इस से दुआ में और भी अधिक दर्द पैदा हुआ।

एक दिन जज ने इस औरत से कहा कि अहमदियों से बात करो। इस पर इस मालकिन औरत ने जज से कहा कि अहमदियों से मैंने बहुत बदतमीज़ी की है। मैं किस तरह उनके पास जाऊं। इस पर जज ने कहा कि इसके अतिरिक्त तुम्हारे पास और कोई रास्ता भी नहीं है। अत: यह औरत एक दिन रात को हमारे पास आई और क्षमा चाही और अपने किए की माफ़ी मांगी और कहने लगी कि आप यह स्थान लें मैंने अदालत में बात कर ली है।

इस के बाद अदालत ने एक नोटिस भी जारी किया कि यह स्थान हम जमाअत अहमदिया को देने लगे हैं। अगर किसी को एतराज़ हो तो एक माह के अंदर अंदर अदालत से रुजू करे वर्ना यह स्थान जमाअत अहमदिया को दे दिया जाएगा। मगर किसी की तरफ़ से कोई एतराज़ ना आया। अत: अदालत ने रजिस्ट्री की तारीख़ निर्धारित कर दी

तारीख़ निर्धारित होने के बाद हम ने इस औरत से कहा कि रजिस्ट्री वाले दिन घर की चाबियाँ लेकर आओ। परन्तु इस ने कहा कि मैं अपने दो बच्चों को ले कर कहाँ जाऊँगी। इस पर हमने उस को किराया पर स्थान लेकर देने का वादा किया और किराया की रक़म उस की क़ीमत से काट ली गई। मकान को देखकर कहने लगी कि इस का रंग अच्छा नहीं। ख़ुद्दाम ने उसकी पसंद का रंग भी कर दिया। कहने लगी कि सामान उठाने के लिए गाड़ी नहीं। ख़ुद्दाम ने इसका सामान भी स्थानान्तरित कर दिया।

अमीर साहिब वर्णन करते हैं कि रजिस्ट्री वाले दिन जब दस्तख़त होने लगे तो मैंने कहा कि मैं तो कोई काम बिना दुआ के नहीं करता। दुआ करूँगा और फिर दस्तख़त करूँगा। इस पर हुकूमती अफ़्सर जज कहने लगा कि यह हुकूमती संस्था है। इस के लिए आज्ञा नहीं दी जा सकती। मैंने कहा में यह स्थान बिना दुआ के न लूँगा। इस पर मालकिन परेशान हो गई और बेंक वाले भी परेशान हुए क्योंकि उनकी रक़म भी जाती थी। इस पर वह औरत मुझे फ्रैंच भाषा में बार-बार कहने लगी कि "ले लें" ।"ले लें" मेहरबानी करके"ले लें" वही शब्द जो हुज़ूर अनवर ने फ़रमाए थे वही शब्द वह बार-बार कहती जा रही थी। इस वक़्त दफ़्तर के लोग यह सब कुछ देख रहे थे। यह लोग मुझे कहने लगे कि आपने क्या दुआ करनी है इस पर मैंने कहा कि मुझे यह दुआ करनी है कि यह स्थान इस्लाम और इन्सानियत का सबसे बड़ा मर्कज़ बन जाए। इस पर जज ने कहा कि अगर यह बात है तो मैं भी यह दुआ करता हूँ।

अत: दस्तख़त कर दिए गए और यह स्थान क़ानूनी तौर पर जमाअत के नाम रजिस्टर हो गई। ख़ुदा तआला ने अपने ख़लीफ़ा के मुँह से निकले हुए शब्द शब्द, हर्फ़ हर्फ़ पूरे कर दिए। और अल्लाह तआला ने यह स्थान हमें प्रदान फ़र्मा दिया। हुज़ूर अनवर ने उसका नाम "बैयतुल अता" रखा।

आज बुध के रोज़ हॉलैंड के एक क्षेत्रीय टीवी' Omroep Flevoland" ने निम्नलिखित ख़बर दी: अलमेरे में अहमदिया मस्जिद का उद्घाटन

दिनांक मंगल बैयतुल आफियत का उद्घाटन हुआ। यह मस्जिद जमाअत अहमदिया की है। यह पाकिस्तान से सम्बन्ध रखने वाली एक इस्लामी जमाअत है जिनका ईमान यह है कि उनके संस्थापक वह मौऊद मसीह हैं जिनकी पेशगोई मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो ने की थी। बाक़ी मुसलमान फ़िर्क़े इस जमाअत को ग़ैर मुस्लिम क़रार देते हैं।

मस्जिद का उद्घाटन जमाअत के ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ने किया। यह मौजूदा विश्वव्यापी जमाअत के सरबराह हैं। अहमदी अपने ख़लीफ़ा को दुनिया का सबसे प्रमुख इन्सान समझते हैं। यहां के अहमदी बहुत ख़ुश हैं कि समय के ख़लीफ़ा उन से मिलने आए हैं। इस आयोजन में बहुत से जमाअत के बाहर के अन्य मेहमान शामिल हुए थे। जिन को रात का खाना भी पेश किया गया। अहमदी जमाअत दूसरी धार्मिक जमाअतों से मिलने के लिए तैय्यार है और धार्मिक बराबरी को बढ़ावा देना चाहते हैं। अलमेरे में लगभग 80 अहमदी रहते हैं और देश में लगभग1500

03 अक्तूबर2019 ई(दिनांक जुम्मेरात)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह छ: बजकर पैंतालीस मिनट पर हाल में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की दफ़्तरी मामले पूरा करने में व्यस्तता रही।

प्रोग्राम के अनुसार दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने हाल में तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा करके पढ़ाऐं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।पिछले-पहर भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की दफ़्तरी मामले की अदायगी में व्यस्तता रही

फ़ैमिली मुलाक़ातें

प्रोग्राम के अनुसार छ: बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज मुलाक़ातों के इस सैशन में 45 फ़ैमिलीज़ के160 लोगों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। प्रत्येक फ़ैमिली ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र और छात्राओं को क़लम प्रदान फरमाए और दया करते हुए छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फरमाए

आज मुलाक़ात कारने वाली यह फ़ैमिलीज़ पैरिस (Paris) की पाँच जमाअतों से 80 किलोमीटर का सफ़र तय करके आई थीं। इस के लिए Epernay जमाअत से आने वाले दोस्त और फ़ैमिलीज़ एक सौ किलोमीटर का दूरी तय करके पहुंची थीं। इन सभी ने जहां अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया वहां प्रत्येक अन्न बरकतों वाले क्षण से बहुत अधिक बरकतें समेटते हुए बाहर आया। बीमारों ने अपनी सेहतके लिए दुआएं प्राप्त कीं। विभिन्न परेशानियां और समस्याओं में घिरे हुए लोगों ने अपनी तकलीफ़ें दूर होने के लिए दुआ की निवेदन किए और

हार्दिक सन्तोष पाकर मुस्कुराते हुए चेहरों के साथ बाहर निकले। छात्र और छात्राओं ने अपनी शिक्षा और परीक्षाओं में कामयाबी के लिए अपने प्यारे आक़ा से दुआएं प्राप्त कीं। अत: प्रत्येक ने अपने प्यारे आक़ा की दुआओं से हिस्सा पाया। राहत सकून और दलि का सकून हुआ।

एक अफ़्रीकन फ़ैमिली जब मुलाक़ात करके दफ़्तर से बाहर आई तो फ़ैमिली के सरबराह हाफ़िज़ सलीम तौरे साहब कहने लगे कि आज मैं बहुत ख़ुश हूँ। प्यारे आक़ा का क़ुरब हमें नसीब हुआ है। मेरे पास शब्द नहीं कि मैं वर्णन कर सकूं कि इस वक़्त मेरे दिल की क्या कैफ़ीयत है। मेरे दिल में क्या है। मेरा दिल शुक्र के भावनाओं से भरा हुआ है। सिर्फ़ यही कह सकता हूँ कि अल्हम्दुलिल्लाह।

पाकिस्तान से आने वाले एक दोस्त इमरान अहमद साहिब ने वर्णन किया आज यह मुलाक़ात मेरी ज़िन्दगी का ख़ुश-क़िस्मत तरीन क्षण है। मैं हमेशा यह दुआ किया करता था कि कभी ज़िन्दगी में मेरी भी प्यारे आक़ा से मुलाक़ात हो। आज मेरी दुआ की क़ुबूलियत की घड़ी थी। मुझे इंतिहाई करीब से हुज़ूर अनवर का दर्शन नसीब हुआ मैं उसे कभी भूल नहीं सकता।

एक नौजवान कहने लगा आज मैं बहुत ख़ुश हूँ। मैं अधिक वर्णन करने की शक्ति नहीं पाता। बस इतना कहता हूँ कि "अल्लाहुम्मा अय्यद इमामना बेरूहिल क़ूदस।"

एक बच्चा ख़ुशी ख़ुशी बता रहा था कि हुज़ूर ने मुझे पेन और चॉकलेट दी है। मैं स्पेन से अपने स्कूल का काम करूँगा और अब अधिक मेहनत करूँगा।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम आठ बजे तक जारी रहा। इस के बाद सवा आठ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने हाल में तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाईं। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

जमाअत अहमदिया फ्रांस का 27वां जलसा सालाना 4 अक्तूबर दिनांक जमअतुल मुबारक उसी स्थान पर शुरू हो रहा है। मज़बुत बिल्डिंग के अतिरिक्त इस व्यापक खुली ज़मीन पर मार्कीज़ और टेंट, ख़ेमा लगा कर जलसा सालाना किए प्रबन्ध किए गए हैं

मर्दाना और लज्ना के जलसा गाह के अलग अलग अहाता में मार्कीज़ लगाई गई हैं। इस के अतिरिक्त जलसा के मर्दाना हिस्सा में MTA के प्रबन्ध के लिए अलग मार्की है। विशेष मेहमानों का प्रबन्ध एक अलग मार्की लगा कर किया गया है। इस के अतिरिक्त नुमाइश विभाग, तब्लीग़ विभाग, ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट विभाग, अन्य विभागों के लिए मार्कीज़ लगा कर प्रबन्ध किया गया है

दफ़्तर जलसा सालाना, रजिस्ट्रेशन विभाग और scanning विभाग के लिए भी दफ़्तर स्थापित किए गए हैं

रिहायश के लिए और खाना खाने के लिए अलग अलग मार्कीज़ लगाई गई हैं। बाज़ार का भी प्रबन्ध किया गया है। बाथरूम का प्रबन्ध भी अलग तौर पर किया गया है

जलसा गाह के लज्ना के हिस्सा में लज्ना के जलसा गाह के अतिरिक्त लज्ना के लिए खाना खाने की मार्की भी लगाई गई है। रजिस्ट्रेशन विभाग और अन्य दफ़तर और लज्ना के लिए एक अलग बाज़ार का भी प्रबन्ध किया गया है। बाथरूम का प्रबन्ध भी है। मर्दों और औरतों के लिए अलग अलग पार्किंग का प्रबन्ध भी है और पार्किंग के लिए भी स्थान उपलब्ध किए गए हैं।

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इस ज़मीन पर, जमाअत के इस सैंटर"बैयतुल अता "में जो लगभग पौने छ: हेक्टर पर आधारित है जलसा सालाना के समस्त प्रबन्ध बड़ी आसानी से हुए हैं। अल्लाह के फ़ज़ल तथा करम से जमाअत फ्रांस को एक बड़ी व्यापक और खुली ज़मीन अपने जलसा के लिए उपलब्ध है। अल हम्दो लिल्लाह

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

4 अक्तूबर 2019 दिनांक जमअतुल मुबारक

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह छ: बजकर पैंतालीस मिनट पर हाल में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की विभिन्न प्रकार के दफ़्तरी मामले को पूरा करने में व्यस्तता रही

जलसा सालाना का आरम्भ

आज अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत अहमदिया फ्रांस के 27वीं जलसा सालाना का आरम्भ हो रहा था। और आज जलसा सालाना का पहला दिन था। प्रोग्राम के अनुसार दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ झण्डा लहराने के आयोजन के लिए तशरीफ़ लाए। हुज़ूर अनवर ने लिवाए अहमदियत लहराया। जब कि अमीर साहिब फ्रांस ने फ्रांस का क़ौमी झण्डा लहराया। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई। MTA इंटरनेशनल की यहां जलसा गाह से Live प्रसारण शुरू हो चुके थे। झण्डा लहराने का यह आयोजन भी दुनिया-भर में सीधा दिखाया गया। इस के बाद हुज़ूर अनवर मर्दाना जलसा गाह में तशरीफ़ लाए और ख़ुत्बा जुम्अ: इरशाद फ़रमाया। जिसके साथ जलसा का उद्घाटन हुआ।(यह ख़ुत्बा सम्पूर्ण रूप से अख़बार बदर में प्रकाशित हो चुका है)हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला का यह ख़ुत्बा जुम्अ:2 बजकर55 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ जुम्अ: के साथ नमाज़ अस्र जमा करके पढ़ाई

नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अमीर साहिब फ्रांस को हिदायत फ़रमाई कि स्टेज पर जो बैनर है, नमाज़ों के वक़्त उस के निचले हिस्सा को कपड़े से ढाँप दिया करें ताकि नज़र न पड़े। बैनर पर जमाअत फ्रांस के पिछले जलसा सालाना को तस्वीरी भाषा में प्रस्तुत किया गया था और जमाअत के नए सैंटर बैयतुल अता का नक़्शा तस्वीरी भाषा में दिखाया गया था। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले आए।

आज नमाज़ जुम्अ: पर हाज़िरी तेरह सौ(1300)के लगभग थी। इस में बैरूनी देशों से चार सौ से अधिक मेहमान शामिल हुए थे। फ्रांस के अतिरिक्त, जर्मनी, बर्तानिया, बेल्जियम, स्पेन, अल्जीरिया, बोरकीनिया फासो, कैनेडा, गेम्बया, एवरीकोस्ट, हॉलैंड, इटली, माली, पाकिस्तान, सेनेगाल, स्विटज़रलैंड, मुत्तहदा अरब इमारात और यू एस स ए से सम्बन्ध रखने वाले दोस्त शामिल हुए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का ख़ुत्बा जुम्अ: इस जलसा गाह से MTA इंटरनैशनल पर सीधा प्रसारित हुआ।

प्रोग्राम के अनुसार आठ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने जलसा गाह तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए

5 अक्तूबर 2019 दिनांक हफ़्ता

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 6 बजकर 45 मिनट पर तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ विभिन्न दफ़्तरी मामले को पूरा करने में व्यस्त रहे।

हुज़ूर अनवर के साथ औरतों का इजलास

आज प्रोग्राम के अनुसार लज्ना जलसा गाह में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का ख़िताब था। प्रोग्राम अनुसार साढ़े12 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ लज्ना जलसा गाह में तशरीफ़ लाए। सदर लज्ना इमा इल्लाह फ्रांस फ़र्हत फ़हीम साहिबा नाज़िमा आला ने अपनी नायब नाज़मात के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का स्वागत किया और अपने प्यारे आक़ा को स्वागत कहा।

इज्लास का आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो प्रिया इनाम काहलों साहिबा ने की और इस का उर्दू अनुवाद प्रिया हाजिरा हादी साहिबा ने प्रस्तुत किया। इस के बाद प्रिया आईशा सुन्दुस साहिबा ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कलाम

एक न इक दिन पेश होगा तो फ़ना के सामने

चल नहीं सकती किसी की कुछ क़ज़ा के सामने

अच्छी आवाज़ से प्रस्तुत किया।

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने शैक्षिक क्षेत्र में नुमायां कामयाबी प्राप्त करने वाली 41 छात्राओं को अस्नाद प्रदान फरमाएं। शैक्षिक ऐवार्ड प्राप्त करने वाली इन ख़ुशनसीब छात्राओं के नाम निम्नलिखित हैं

इक़रा ख़लील BTEC नैशनल डिप्लोमा

मह जबीं अज़हर BTEC नैशनल डिप्लोमा

कंवल दाऊद BTEC नैशनल डिप्लोमा

क़मर ज़िया BTEC नैशनल डिप्लोमा

दर समीन तूबा वसीम BTEC नैशनल डिप्लोमा

तूबा ताहिर BTEC नैशनल डिप्लोमा

Aneeza Asim मास्टर्ज़ इन साईंस

Ines Rezig ए लेवल

Amina Chettih ए लेवल

Imane Haddioui ए लेवल

Nughz Tul Zahra बी ए टेक्सटाइल डिज़ाइनिंग

ज़नोबेह आमिर बी ए एन साईंसDigital and Creative Media)

Ines Doobory बी ए मार्डन लिटरेचर

फौज़िया चौधरी मास्टर्ज़ इन होम्योपैथी

आसिफ़ा मास्टर ज़यन साईंस आफ़Medication

सादिया ज़फ़र मास्टर्ज़ इन साईकालोजी

अतीया कौसर मास्टर्ज़ इन हिस्ट्री History)

रिज़वाना एजाज़ मास्टर्ज़ Mathematics

मबशरा सदफ़ मास्टर्ज़ उर्दू

शफ़ीक़ा इश्तियाक़ Master in Foreigner Languages International Relation and Comparisons

अज़्का ग़ुलाम मास्टर्ज़ इन मैनिजमंट

क़ुदसिया आलिम मास्टर्ज़ इन एजूकेशन

Asima Naseer मास्टर्ज़ इन एजूकेशन

बुशरा सलाम मास्टर इन ज़ फिज़िक्स Physics)

सना सुहेल मास्टर्ज़ इन साईकालोजी

मर्यम नासिर मास्टर्ज़ इन इलैक्ट्रीकल इंजीनीयरिंग

हिबतुल नूर मर्यम मास्टर्ज़ इन Material Sciences

महवश हफ़ीज़ मास्टर्ज़ इन एजूकेशन

मह जबीन हफ़ीज़ मास्टर्ज़ इन प्राईवेट ला

Duriah Malik Diplome of Architect of Interior/ Enviromental Designer

निदा नसीर मास्टर्ज़ इन एजूकेशन

जुवेरिया ख़ान मास्टर्ज़ इन अकाओंटनसी ,ऐंड आडट

निदा नासिर मास्टर्ज़ इन इंग्लिश

मैमूना ख़ान मास्टर्ज़ इन ब्यालोजी

मदीहा चौधरी पी एचडी जनरल मैडीसन

सनोबर ख़ान पी एचडी जनरल मैडीसन

Mamode Hossen Karina मास्टर्ज़ इन टोरा ज़म

राबिया बिन उवैस ए लेवल साईंस

नादिया अंजुम ए लेवल

हानिया इफ़ज़ाल मास्टर्ज़ इन एजूकेशनल साईंस

बासमा चौधरी मास्टर्ज़

शैक्षिक ऐवार्ड के आयोजन के बाद एक बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने ख़िताब फ़रमाया

(शेष....................)

☆ ☆

☆

ख़िलाफत एक महान नेअमत

(आले इम्रान 104) وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا

अनुवाद: अर्थात और तुम सब के सब अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से पकड़ लो और अलग अलग मत हो

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि

عَلَيْكُمْ بِسُنَّتِيْ وَسُنَّةِ الْخُلَفَاءِ الرَّاشِدِيْنَ الْمَهْدِيِّيْنَ تَمَسَّكُوْا بِهَا

(तिर्मिज़ी किताबुल इलम)

अर्थात तुम मेरी और मेरे हिदायत पाने वाले ख़ुलफ़ाए राशदीन की सुन्नत की पैरवी करना और उसे पकड़ लेना।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

"ख़ुदा तआला ... दो किस्म की क़ुदरत ज़ाहिर करता है। अव्वल ख़ुद नबियों के हाथ से अपनी क़ुदरत का हाथ दिखाता है। दूसरे ऐसे वक़्त में जब नबी की वफ़ात के बाद मुश्किलों का सामना पैदा हो जाता है और दुश्मन ज़ोर में आ जाते हैं और ख़्याल करते हैं कि अब काम बिगड़ गया और यक़ीन कर लेते हैं कि अब यह जमाअत समाप्त हो जाएगी...तब ख़ुदा तआला दूसरी बार अपनी ज़बरदस्त क़ुदरत ज़ाहिर करता है और गिरती हुई जमाअत को सँभाल लेता है। अत: वह जो अख़ीर तक सब्र करता है ख़ुदा ताआला के चमत्कार को देखता है। " (रिसाला अल-वसियत पृष्ठ 7)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो फ़रमाते हैं

" इमाम और ख़लीफ़ा की ज़रूरत यही है कि हर क़दम पर जो मोमिन उठाता है इसके पीछे उठाता है अपनी इच्छा और ख़ाहिशात को इस की इच्छा और ख़ाहिशात के अधीन करता है। अपनी कोशिश को इस की कोशिशों के अधीन करता है। अपने इरादों को उसके इरादों के अधीन करता है। अपनी इच्छाओं को इस की इच्छाओं के अधीन करता है और अपने सामानों को उसके सामानों के अधीन करता है। अगर इस स्थान पर मोमिन खड़े हो जाएं तो उनके लिए कामयाबी और फ़तह यक़ीनी है।"

(अलफ़ज़ल 4 सितम्बर 1937 ई)

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"मैं यहां हर अहमदी और हर नए आने वाले और हर नौजवान पर स्पष्ट करना चाहता हूँ कि इमामत और ख़िलाफ़त और डिक्टेटर शिप में बड़ा फ़र्क़ है। ख़िलाफ़त ज़माना के इमाम को मानने के बाद क़ायम हुई है। अल्लाह तआला के वादों के अनुसार क़ायम हुई है और हर मानने वाला यह वाद करता है कि हम ख़िलाफ़त के निज़ाम को जारी रखेंगे। धर्म में कोई जबर नहीं है। जब अपनी ख़ुशी से धर्म को मान लिया तो फिर धर्म के क़ियाम के लिए इस अह्द को निभाना भी ज़रूरी है जो ख़िलाफ़त के क़ियाम के लिए एक अहमदी करता है और जो क़ौमी एकता के लिए वहदत के लिए ज़रूरी है। ख़िलाफ़त की इताअत के अह्द को इस लिए निभाना है कि एक इमाम की सरकर्दगी में ख़ुदा तआला की हुकूमत को दुनिया के दिलों में बिठाने की साझी कोशिश करनी है।.. ये सब कोशिशें जो ख़िलाफ़त से जुड़ कर हो रही हैं उनकी कामयाबी के नतीजे बता रहे हैं कि इस्लाम की हक़ीक़ी शिक्षा के साथ इन नतीजों का पाना कामयाबी का पाना ख़िलाफ़त की लड़ी में पिरोए जाने के कारण से है।"

(ख़ुत्बा जुमा 6 जून 2014 ई)

ख़िलाफ़त नेअमत उज़्मा है ,रहमत और बरकत है

यह हबलुल्लाह यकजहती है,यकरंगी है,वहदत है

(नज़म :अमतुल बारी नासिर साहिबा)

दुआ है कि अल्लाह तआला हम सबको वास्तविक अर्थों में हब्लुल्लाह को मज़बूती से थामे रखने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए आमीन।

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 11 June 2020 Issue No.24

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

अपनी समस्त योग्यताओं को काम में लाते हुए इल्मी मैदान में ऐसे कारनामे सरअंजाम दें कि मुस्लमानों को उनकी खोई महानता आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अनुयायियों के द्वारा वापस मिल जाए

मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला आपको इल्म तथा मअरफ़त में तरक़्क़ी प्रदान फ़रमाए आप के ज़ेहनों को रोशन फ़रमाए

नज़ारत तालीम कादियान के अन्तर्गत आयोजित होने वाली अहमदिया मुस्लिम रिसर्च स्कालर्ज़ कान्फ्रेंस के लिए हुज़ूर अनवर का विशेष पैग़ाम

सम्मिलित होने वाले प्यारे पी एच डी, वर्कशॉप कादियान

अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लह व बराकतुहो

मुझे यह जान कर बहुत ख़ुशी हुई है कि कादियान में एक वर्कशॉप आयोजित किया जा रहा है जिसमें शामिल होने वाले पी एच डी कर चुके हैं या इस वक़्त कर रहे हैं। अल्लाह तआला इस का आयोजन प्रत्येक दृष्टि से बरकतों वाला फ़रमाए और इस के नेक नतीजे पैदा फ़रमाए। आमीन

मुझ से इस अवसर पर पैग़ाम भिजवाने की दरख़ास्त की गई है। मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला आपको इल्म तथा मअरफ़त में तरक़्क़ी प्रदान फ़रमाए। आपके ज़हनों को रोशन फ़रमाए और आपको लोगों के लिए लाभदायक वजूद आमीन।

अल्लाह तआला का यह बहुत बड़ा एहसान है कि आपको हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने की तौफ़ीक़ मिली जिन्हें अल्लाह तआला ने सिलसिला की तरक़्क़ी और अनुयायियों के इल्म तथा मअर्फ़त में कमाल हासिल करने की महान ख़ुशख़बरी प्रदान फ़रमाई। अत: आप फ़रमाते हैं

"ख़ुदा तआला ने मुझे बार-बार ख़बर दी है कि वह मुझे बहुत महानता देगा और मेरी मुहब्बत दिलों में बिठाएगा। और मेरे सिलसिला को सारी ज़मीन में फैलाएगा और सब फ़िर्क़ों पर मेरे फ़िर्क़ा को ग़ालिब करेगा। और मेरे फ़िर्क़ा के लोग इस क़दर इल्म और मअर्फ़त में कमाल हासिल करेंगे कि अपनी सच्चाई के नूर और अपने प्रमाणों और निशानों की दृष्टि से सब का मुँह-बंद कर देंगे (तजल्लियाते इलाहिया, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 409)

हर अहमदी की ज़िम्मेदारी है कि वह इल्म तथा मार्फ़त में कमाल हासिल करने की भरपूर कोशिश करे ताकि उन आसमानी बिशारात का मिस्दाक़ बन सके। बेशक आप उच्च शिक्षा प्राप्त हैं या उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। लेकिन याद रखें कि इल्म की कोई आख़िरी हद नहीं और तरक़्क़ी का सफ़र कभी ख़त्म नहीं होता। इन्सान सारी ज़िन्दगी इल्म सीखता रहता है। आप भी अपने इल्म को निरन्तर बढ़ाते रहें और अल्लाह तआला से इल्म में वृद्धि की दुआ भी करते रहें। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो ने एक बार फ़रमाया था कि रेल-गाड़ी या जहाज़ में बैठते वक़्त मेरे दिल में यह हरकत होती है कि काश यह अहमदियों के बनाए हुए हूँ और वह उन कंपनियों के मालिक हों।

(उद्धरित तारीख़े अहमदियत, भाग 17 पृष्ठ 101)

आपकी इन नेक आशाओं को भी अपने ज़ेहनों में ताज़ा रखें और अपनी समस्त योग्यताओं को समक्ष लाते हुए इल्मी मैदान में ऐसे कारनामे सरअंजाम दें कि मुसलमानों को उनकी खोई हुई महानता आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अनुयायियों के द्वारा वापस मिल जाए।

अल्लाह तआला आप को इस की तौफ़ीक़ प्रदान करे। आपको हर क़दम पर अपने समर्थन से नवाज़े और ऐसे काम करने की तौफ़ीक़ बख़्शे जो मानव जाति के लिए लाभदायक हों। अल्लाह आपके साथ हो और आपको अहमदियत के आसमान के रोशन सितारे बनाए। आमीन

वस्सलाम ख़ाकसार
(दस्तख़त)मिर्ज़ा मसरूर अहमद
ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस

पृष्ठ 1 का शेष

ग़ैर अल्लाह की तरफ़ झुकता है तो रूह और दिल की ताक़तें उस दरख़्त की तरह (जिसकी शाख़ें आरम्भ में एक तरफ़ कर दी जाएं और इस तरफ़ झुक कर परवरिश पा ले) उधर ही झुकता है और ख़ुदा तआला की तरफ़ से एक सख़्ती और कठोरता उस के दिल में पैदा होकर उसे अटल और पत्थर बना देता है। जैसे वे शाख़ें फिर दूसरी तरफ़ मुड़ नहीं सकता। इसी तरह पर वह दिल और रूह दिन प्रतिदिन ख़ुदा तआला से दूर होती जाती है। अत: यह बड़ी ख़तरनाक और दिल को कपकपा देने वाली बात है कि इन्सान अल्लाह तआला को छोड़कर दूसरे से सवाल करे। इसी लिए नमाज़ की निरन्तरता और पाबंदी बड़ी ज़रूरी चीज़ है ताकि आरम्भ से वह एक मज़बूत आदत की तरह क़ायम हो और अल्लाह की तरफ लौटने का ख़्याल हो फिर धीरे-धीरे वह वक़्त अपने आप आ जाता है जब कि सब को छोड़ने की हालत में इन्सान एक नूर और एक लज़्ज़त का वारिस हो जाता है। मैं इस बात को फिर ताकीद से कहता हूँ। अफ़सोस है कि मुझे वे शब्द नहीं मिले जिसमें ग़ैर अल्लाह की तरफ़ लौटने की बुराईयां वर्णन कर सकूं। लोगों के पास जाकर मिन्नत ख़ुशामद करते हैं। यह बात ख़ुदा तआला की ग़ैरत को जोश में लाती है। क्योंकि यह तो लोगों की नमाज़ है अत: वह इस से हटाता और उसे दूर फेंक देता है। मैं मोटे शब्दों में इस को वर्णन करता हूँ यद्यपि यह बात इस तरह पर नहीं है। मगर समझ में ख़ूब आ सकता है कि जैसे एक ग़ैरत वाले मर्द की ग़ैरत बर्दाशत नहीं करती कि वह अपनी बीवी को किसी ग़ैर के साथ सम्बन्ध पैदा करते हुए देख सके और जिस तरह पर वह मर्द ऐसी हालत में इस बदकिस्मत औरत को क़तल के योग्य समझता बल्कि की बार ऐसी वारदातें हो जाती हैं। ऐसा ही जोश और ग़ैरत उलूहियत का है। उबूदीयत और दुआ ख़ास उसी ज़ात के मुक़ाबला पर हैं। वह पसंद नहीं कर सकता कि किसी अन्य को उपास्य क़रार दिया जाए या पुकारा जाए। अत: ख़ूब याद रखो! और फिर याद रखो! कि अल्लाह के अतिरिक्त की तरफ़ झुकना ख़ुदा से काटना है। नमाज़ और तौहीद कुछ ही कहो, क्योंकि तौहीद के व्यावहारिक इक़रार का नाम ही नमाज़ है, इस वक़्त बे-बरकत और लाभ रहित होती है जब इस में नेस्ती और विनय की रूह और हनीफ़ (झुका हुआ) दिल न हो।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 140 से 143 प्रकाशन 2008 कादियान)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad